दक्ष®

10 अगस्त 2022 को जारी नवीनतम पाठ्यक्रमानुसार

राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड, जयपुर द्वारा आयोजित

A Complete Book for

REET Mains Exam.

No. 1

Grade-3rd

Level-1 & 2

(कक्षा 1 से 5) & (कक्षा 6 से 8)

अध्यापक सीधी भर्ती

राजस्थान का भौगोलिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक ज्ञान एवं राजस्थानी भाषा

For Section-I

लेवल–1 के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण 100 अंक सुनिश्चित करें।

लेवल–2 के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण 80 अंक सुनिश्चित करें।

Special Features

- राजस्थान के भूगोल का बेहतरीन मानचित्रों एवं आरेखों द्वारा प्रस्तुतीकरण एवं प्रत्येक अध्याय को नवीनतम आँकड़ों द्वारा अपडेट किया गया है।
- राजस्थान के इतिहास एवं संस्कृति तथा राजस्थानी भाषा को विभिन्न डायग्रामों, तालिकाओं एवं चित्रों द्वारा क्रमबद्ध तरीके से समझाया गया है।
- NCERT, RBSE एवं शिक्षा मंत्रालय की प्रमाणिक पुस्तकों पर आधारित लेखन एवं सरल भाषा में प्रस्तुतीकरण।

Buy Online at : WWW.DAKSHBOOKS.COM

M.K. YADAV

दक्ष®

10 अगस्त 2022 को जारी नवीनतम पाठ्यक्रमानुसार

राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड, जयपुर द्वारा आयोजित

A Complete Book for

REET Mains Exam.

अध्यापक सीधी भर्ती

No. 1

Grade-3rd

Level-1 & 2

(कक्षा 1 से 5) & (कक्षा 6 से 8)

राजस्थान का भौगोलिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक ज्ञान एवं राजस्थानी भाषा

For Section-I

पूर्णतः पाठ्यक्रमानुसार एकमात्र पुस्तक

NCERT, RBSE एवं प्रामाणिक पुस्तकों पर आधारित

- दक्ष की पुस्तकों में परीक्षा के पैटर्न व शत-प्रतिशत परीक्षा के पाठयक्रम के आधार पर ही सटीक व सारगर्भित मैटर का चयन किया जाता है अनावश्यक नहीं।
- दक्ष की पुस्तकें प्रति वर्ष अपडेटेड होती हैं तथा इनमें पूर्णतया नवीनतम व संवर्द्धित आँकड़े प्रस्तुत किये जाते हैं।
- दक्ष प्रकाशन की पुस्तकों का लेखन कार्य योग्य एवं अनुभवी विषय-विशेषज्ञों द्वारा किया जाता है।
- दक्ष प्रकाशन की पुस्तकों से एक सामान्य स्तर का परीक्षार्थी भी निश्चित सफलता प्राप्त कर सकता है। आप भी यह पुस्तक पढ़कर अपनी सफलता प्राप्त करें।
- सभी स्तर की प्रतियोगी परीक्षाओं में अधिकांश प्रश्न दक्ष की पुस्तकों में से ही आते हैं।
- जिन्होंने दक्ष की पुस्तकें पढ़ी हैं वे इस प्रतिस्पर्द्धी युग में अवश्य सफल हुये हैं।

लेखक
M.K. Yadav
(RES)

सम्पादक
Pooja Yadav
M.A., B.Ed., Expert G.K. & G.S.

दक्ष प्रकाशन
(A Unit of College Book Centre)
WWW.DAKSHBOOKS.COM

अनुक्रमणिका

अध्याय नं. अध्याय का नाम ..... पृष्ठ नम्बर

❖ भूगोल [Geography] 1–166

1 राजस्थान का भौगोलिक स्वरूप
[Geographical Structure of Rajasthan] 1
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 16

2 मानसून तंत्र एवं जलवायु
[Monsoon System & Climate] 20
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 26

3 अपवाह तंत्र : झीलें, नदियाँ, बाँध, ऐनिकट, जल संरक्षण विधियाँ एवं तकनीकियाँ
[Drainage System : Lakes, Rivers, Dams, Anicuts, Water Conservation Methods and Techniques] 30
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 46

4 राजस्थान की वन सम्पदा
[Forest Resources of Rajasthan] 49
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 56

5 राजस्थान में वन्य जीव-जन्तु, वन्य जीव संरक्षण एवं अभयारण्य
[Wildlife, Wildlife Conservation and Sanctuary in Rajasthan] 60
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 66

6 राजस्थान में मृदाएँ एवं मृदा संरक्षण
[Soil and Soil Conservation in Rajasthan] 67
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 70

7 राजस्थान की प्रमुख फसलें
[Major Crops of Rajasthan] 72
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 85

8 जनसंख्या, जनसंख्या-घनत्व, साक्षरता और लिंगानुपात
[Population, Population-Density, Literacy and Sex Ratio] ... 90
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 101

9 राजस्थान की जनजातियाँ एवं जनजातीय क्षेत्र
[Tribes and Tribal Areas of Rajasthan] 104
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 112

10 राजस्थान में खनिज संसाधन-धात्विक एवं अधात्विक खनिज
[Mineral Resources in Rajasthan-Metallic and Non-Metallic Minerals] 115
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 121

अध्याय नं. अध्याय का नाम ..... पृष्ठ नम्बर

11 राजस्थान के ऊर्जा संसाधन : परम्परागत एवं गैर-परम्परागत
[Energy Resources of Rajasthan : Conventional & Non-Conventional] 123
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 130

12 राजस्थान के पर्यटन स्थल
[Tourist Places of Rajasthan] 132
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 154

13 राजस्थान में यातायात के साधन
[Means of Transport in Rajasthan] 158
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 165

❖ इतिहास एवं संस्कृति [History and Culture] 167–350

1 राजस्थान की प्राचीन सभ्यताएँ : कालीबंगा,आहड़, गणेश्वर, बालाथल, बैराठ इत्यादि
[Ancient Civilizations of Rajasthan: Kalibanga, Ahar, Ganeshwar, Balathal, Bairath etc.] 167
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 172

2 राजस्थान की महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाएँ एवं प्रमुख राजवंश
[Important Historical Events and Major Dynasties of Rajasthan] 174
❖ जनपदकालीन राजस्थान 174
❖ मगध साम्राज्य के अधीन राजस्थान 176
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 177
❖ गुर्जर-प्रतिहार राजवंश 178
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 179
❖ गुहिल-सिसोदिया राजवंश 179
❖ वागड़ के गुहिल 185
❖ प्रतापगढ़ के सिसोदिया 185
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 186
❖ शाहपुरा के सिसोदिया 186
❖ राठौड़ राजवंश 187
❖ मारवाड़ (जोधपुर) के राठौड़ 187
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 189
❖ बीकानेर के राठौड़ 190
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 191
❖ किशनगढ़ के राठौड़ 191
❖ कुशलगढ़ के राठौड़ 191
❖ चौहान-राजवंश 192
❖ अजमेर के चौहान 192
❖ रणथम्भौर के चौहान 193
❖ नाडोल के चौहान 194
❖ जालौर के सोनगरा चौहान 194

अध्याय नं. अध्याय का नाम ..... पृष्ठ नम्बर

- सिरोही के देवड़ा चौहान 195
- बूँदी के हाड़ा चौहान 195
- कोटा के हाड़ा चौहान 196
- गागरोनगढ़ के खींची चौहान 196
- महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 197
- कच्छवाह राजवंश 197
- महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 201
- राजस्थान के अन्य प्रमुख राजवंश 201
- महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 204

3 राजस्थान के राजवंशों की प्रशासनिक एवं राजव्यवस्था
[Administrative and Polity of the Dynasties of Rajasthan] 206
- महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 211

4 राजस्थान की स्थापत्य कला : किले, स्मारक, बावड़ी एवं हवेलियाँ इत्यादि
[Architecture of Rajasthan : Forts, Monuments, Stepwells and Havelis etc.] 213
- महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 226

5 राजस्थान के मेले व त्योंहार
[Fairs and Festivals of Rajasthan] 229
- महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 236

6 राजस्थान की लोक कला : लोक संगीत, लोक वाद्य, लोक नाट्य, लोक नृत्य
[Folk Art of Rajasthan : Folk Music, Folk Instruments, Folk Drama, Folk Dance] 237
- महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर (लोक संगीत) 250
- महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर (लोक वाद्य) 251
- महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर (लोक नाट्य) 251
- महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर (लोक नृत्य) 252

7 राजस्थान की सांस्कृतिक परम्परा एवं विरासत
[Cultural Tradition and Heritage of Rajasthan] 254
- महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 259

8 राजस्थान के धार्मिक आंदोलन : प्रमुख संत, लोकदेवता एवं देवियाँ
[Religious Movements of Rajasthan : Major Saints, Gods & Goddesses] 260
- महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर (लोक संत) 271
- महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर (राजस्थान के प्रमुख लोक-देवता) 272
- महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर (राजस्थान की प्रमुख लोक-देवियाँ) 274

9 राजस्थान के महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थल
[Important Historical Places of Rajasthan] 276
- महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 281

अध्याय नं. अध्याय का नाम ..... पृष्ठ नम्बर

10 राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व
[Major Personalities of Rajasthan] 283
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 295

11 राजस्थान के वस्त्र एवं आभूषण
[Garments and Jewelery of Rajasthan] 297
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 300

12 राजस्थान में चित्रकला एवं हस्तशिल्प
[Painting and Handicrafts in Rajasthan] 301
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 311

13 1857 की क्रांति में राजस्थान का योगदान
[Contribution of Rajasthan in the Revolution of 1857] 316
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 319

14 राजस्थान में किसान व जनजातीय आंदोलन
[Peasants and Tribal Movements in Rajasthan] 321
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 327

15 राजस्थान में प्रजामंडल आन्दोलन एवं राजनीतिक जागृति
[Prajamandal Movement and Political Awakening in Rajasthan] 334
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 341

16 राजस्थान का एकीकरण
[Integration of Rajasthan] 343
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 348

❖ राजस्थानी भाषा [Rajasthani Language] 351–368

1 राजस्थान की क्षेत्रीय बोलियाँ
[Regional Dialects of Rajasthan] 351
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 354

2 प्रमुख राजस्थानी कृतियाँ
[Major Rajasthani Masterpieces] 356
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 359

3 राजस्थानी साहित्य : प्रमुख साहित्यकार, संत साहित्य एवं लोक साहित्य
[Rajasthani Literature : Prominent Litterateurs, Saint Literature & Folk Literature] 360
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 367

भूगोल [GEOGRAPHY]

1 राजस्थान का भौगोलिक स्वरूप [Geographical Structure of Rajasthan]

राजस्थान भारत का सबसे बड़ा राज्य है। एक ओर जहाँ यह इसके गौरवशाली इतिहास के लिए जाना जाता है वहीं दूसरी ओर इसका आकार एवं भौतिक स्वरूप अनेक भौगोलिक विशिष्टताओं को समाहित करता है। यहाँ के विशाल मरुस्थल, अरावली की श्रृंखलाओं, नदियों के मैदानी क्षेत्रों, झीलों, पहाड़ियों, पठारों आदि ने राज्य के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक पर्यावरण को सदैव प्रभावित किया है। अतः राजस्थान की विशिष्टताओं को समझने हेतु यहाँ की भौतिक विशेषताओं, स्थिति, विस्तार एवं आकृति का संपूर्णता में अध्ययन आवश्यक है।

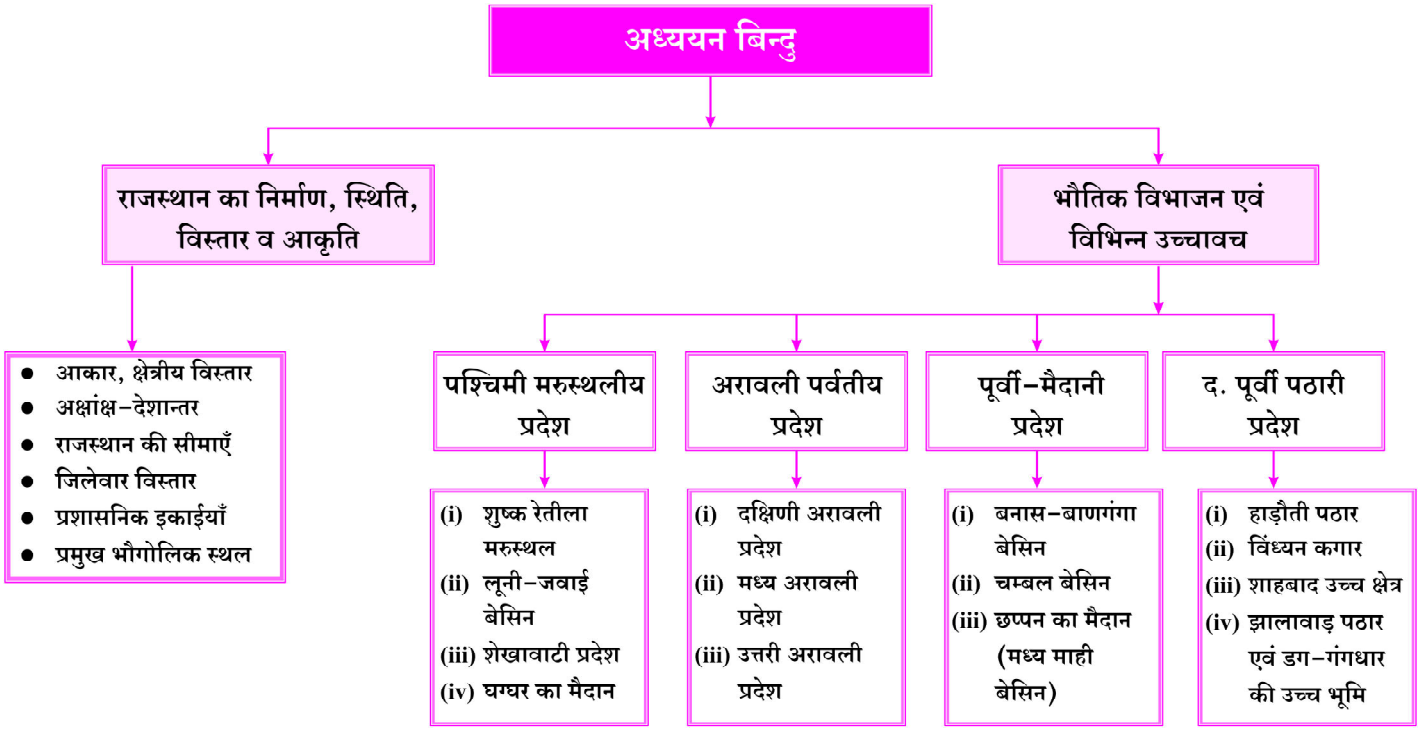

राजस्थान का निर्माण

- राजस्थान का मरुस्थलीय भाग एवं उत्तर–पूर्वी मैदानी क्षेत्रों का निर्माण प्राचीन **टेथिस सागर** के अवेशेषों पर हुआ है।
- उक्त क्षेत्रों को कालांतर में हिमालय की नदियों द्वारा गाद व मिट्टी से पाट दिया गया। राजस्थान में सांभर, डीडवाना, पचपद्रा, लूणकरणसर आज भी टेथिस सागर के अवशेष के रूप में मौजूद खारे पानी की झीले हैं।
- राजस्थान की अरावली पर्वतमाला तथा दक्षिणी पठारी भाग प्राचीन **गौंडवाना लैंड** के भू–भाग है।
- अरावली पर्वतमाला राज्य की प्रमुख **जल–विभाजक** है जो राजस्थान को दो भागों में बाँटती है।
- अरावली पर्वतमाला **प्री–कैम्ब्रियन** युगीन वलित पर्वत श्रृंखला है। जो वर्तमान में अवशिष्ट पर्वत श्रेणी के रूप में विध्यमान है।
- अरावली के दक्षिण–पूर्व में हाड़ौती का पठार, मालवा के पठार का ही एक भाग है जो लावा निर्मित है।
- जॉर्ज थॉमस ने 1800 ई. में इस भू–भाग के लिए **'राजपूताना'** नाम का सर्वप्रथम प्रयोग किया था।
- ब्रिटिश काल में **कर्नल जेम्स टॉड** ने अपनी पुस्तक **''एनाल्स एंड एन्टीक्वीटीज ऑफ राजस्थान''** (1829 ई.) में इस क्षेत्र हेतु सर्वप्रथम **'राजस्थान'** शब्द का प्रयोग किया। स्वतन्त्रता के बाद 1 नवम्बर 1956 ई. को राजस्थान का एकीकरण पूरा हुआ एवं यही नाम स्वीकार किया गया।

2 मानसून तंत्र एवं जलवायु [Monsoon System & Climate]

जलवायु एक महत्त्वपूर्ण भौगोलिक कारक है जो न केवल प्राकृतिक तत्वों को बल्कि आर्थिक एवं जनसांख्यकीय स्वरूप को भी प्रभावित करता है। राजस्थान की जलवायु **शुष्क** से **उप–आर्द्र मानसूनी** प्रकार की है। राजस्थान में जहाँ अरावली के पश्चिम में उच्च दैनिक एवं वार्षिक तापान्तर, निम्न आर्द्रता तथा तीव्र हवाओं से युक्त **शुष्क जलवायु** (Arid Climate) है। वहीं दूसरी ओर अरावली के पूर्व में **अर्द्धशुष्क** (Semi Arid) एवं **उप–आर्द्र** (Sub-Humid) जलवायु है, जहाँ वर्षा की मात्रा में वृद्धि हो जाती है तथा साथ में वायु की गति में भी कमी रहती है, संपूर्ण रूप से राजस्थान की जलवायु भारत की **'मानसूनी जलवायु'** का ही अभिन्न अंग है किन्तु विभिन्न प्राकृतिक कारकों के प्रभाव के कारण राज्य का अधिकांश क्षेत्र शुष्क जलवायु वाला है।

अध्ययन बिन्दु

- जलवायु का अर्थ एवं राजस्थान की जलवायु को प्रभावित करने वाले तत्व
- राजस्थान की जलवायु की विशेषताएँ
- राजस्थान में जलवायु का ऋतु प्रारूप एवं मानसून की क्रियाविधि
- राजस्थान में वर्षा का वितरण
- राजस्थान के जलवायु प्रदेश
  - सामान्य वर्गीकरण
  - कोपेन का वर्गीकरण
  - ट्रिवार्था का वर्गीकरण
  - थार्नवेट का वर्गीकरण

जलवायु का अर्थ

किसी विस्तृत क्षेत्र की लम्बी अवधि (सामान्यतः 30 वर्ष से अधिक) की औसत मौसमी दशाओं को उस क्षेत्र की **जलवायु** कहते है। जबकि किसी स्थान पर किसी विशेष समय में मौसम के घटकों के संदर्भ में वायुमण्डलीय दशाओं के योग को **मौसम** कहते है।

राजस्थान की जलवायु को प्रभावित करने वाले तत्व

(1) स्थिति

❖ अक्षांशीय स्थिति जलवायु का प्रमुख नियंत्रण तत्व है। राजस्थान 23°3' से 30°12' उत्तरी अक्षांशों के मध्य स्थित है। $23^1/_2°$ उत्तरी अक्षांश (कर्क रेखा) राज्य के दक्षिणी हिस्सों डूँगरपुर–बाँसवाड़ा जिलों से गुजरती है। अतः राज्य का अधिकांश भाग **शीतोष्ण कटिबन्ध** में स्थित है। लेकिन उत्तर में हिमालय की अवस्थिति के कारण यहाँ ठण्डी हवाओं का प्रभाव नहीं पड़ता और अक्षांशीय दृष्टिकोण से अधिकांश भाग शीतोष्ण कटिबंध में होने के बावजूद जलवायु उष्ण बनी रहती है। उष्ण कटिबंधीय जलवायु के साथ न्यून वर्षा ने यहाँ के अधिकांश भागों में शुष्क एवं अर्द्धशुष्क जलवायु की दशाएँ उत्पन्न की है।

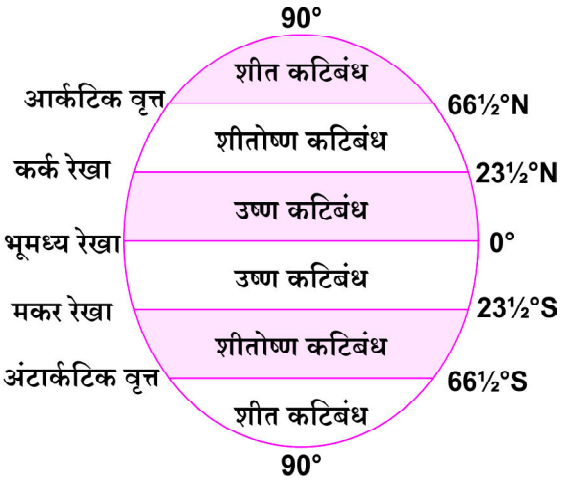

पृथ्वी के जलवायु कटिबंध

(2) समुद्र से दूरी

❖ अरब सागर का समुद्र तट राजस्थान से लगभग 350 कि.मी. दूर है। अतः यहाँ की जलवायु पर सामुद्रिक प्रभाव नगण्य है। और सम्पूर्ण राज्य **महाद्वीपीय जलवायु** (Continental Climate) से युक्त है, जो गर्म और शुष्क होती है एवं नमी अपेक्षाकृत कम होती है।

3 अपवाह तंत्र : झीलें, नदियाँ, बाँध, ऐनिकट, जल संरक्षण विधियाँ एवं तकनीकियाँ

[Drainage System : Lakes, Rivers, Dams, Anicuts, Water Conservation Methods and Techniques]

जब कोई मुख्य नदी अपनी सहायक नदियों के साथ मिलकर किसी प्रवाह प्रारूप का निर्माण करती है तो वह उस नदी का अपवाह तंत्र कहलाता है। राजस्थान भारत का एक शुष्क प्रदेश है अतः यहाँ नदियों, झीलों व बाँधों का विशेष महत्व है, शुष्क प्रदेश होने के नाते यहाँ परम्परागत जल संरक्षण की अनेक विधियाँ भी विकसित हुई है। राजस्थान की अधिकांश नदियाँ केवल वर्षा काल में ही प्रवाहित होती है। अरावली पर्वत श्रृंखला राजस्थान में मुख्य जलविभाजक का काम करती है और राज्य में बहने वाली नदियों को दो भागों में बाँटती है। इसके अलावा राज्य में अन्तःप्रवाही नदियाँ भी है। अतः प्रवाह के आधार पर राजस्थान के अपवाह तंत्र को तीन भागों में बाँटा जाता है, जो निम्न डायग्राम से स्पष्ट है।

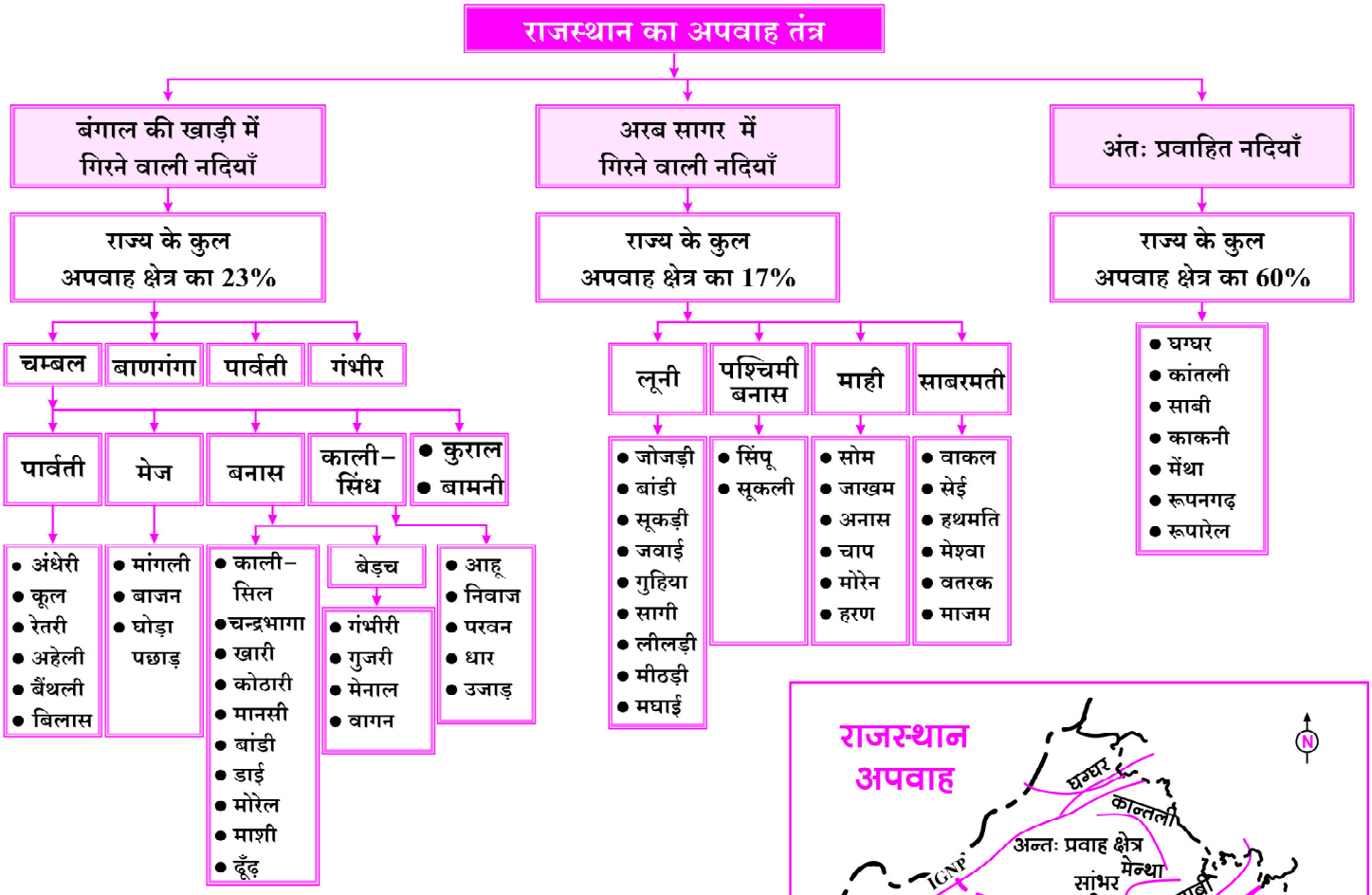

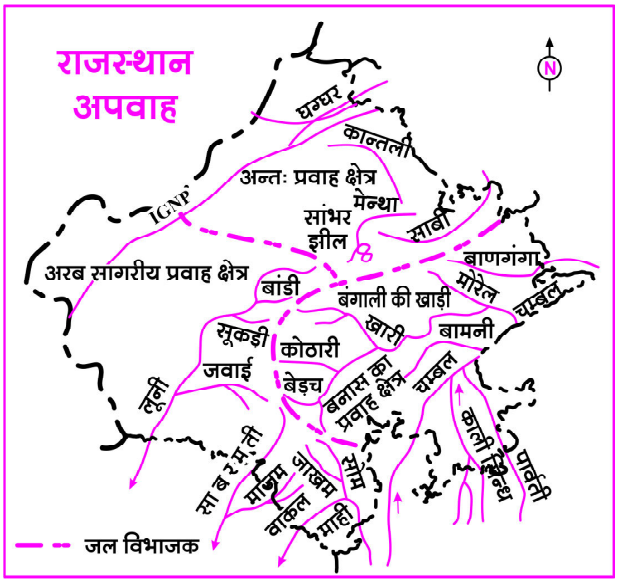

बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली नदियाँ

अरावली पर्वत श्रृंखला के पूर्व में स्थित अधिकांश नदियाँ चम्बल, बाणगंगा, गंभीरी, पार्वती आदि नदियों के साथ मिलकर यमुना में मिलती है और बंगाल की खाड़ी अपवाह तंत्र का हिस्सा बनती है।

चम्बल नदी का अपवाह तंत्र

- चम्बल नदी का उद्गम मध्यप्रदेश के इंदौर जिले में महु के निकट **जानापाव पहाड़ी** है।

4 राजस्थान की वन सम्पदा [Forest Resources of Rajasthan]

आँकड़े नवीनतम आर्थिक समीक्षा 2021-22 एवं वन स्थिति रिपोर्ट 2021 के अनुसार अपडेट किए गए हैं।

पर्यावरणीय व पारिस्थितिकीय संतुलन स्थापित करने में प्राकृतिक वनस्पति व वनों की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। वन स्थानीय जलवायु को सौम्य व संतुलित करते हैं, मृदा अपरदन रोकते हैं, नदी के प्रवाह को नियमित करते हैं, विभिन्न उद्योगों को कच्चा माल देते हैं तथा जनसंख्या के बड़े भाग को आजीविका प्रदान करते हैं साथ ही वन्यजीवों एवं जैवविविधता को बनाए रखते है। राजस्थान के संदर्भ में वनों का महत्व अत्यधिक है क्योंकि यहाँ वनों का विस्तार सीमित है और उनका विनाश भी तीव्र गति से हो रहा है।

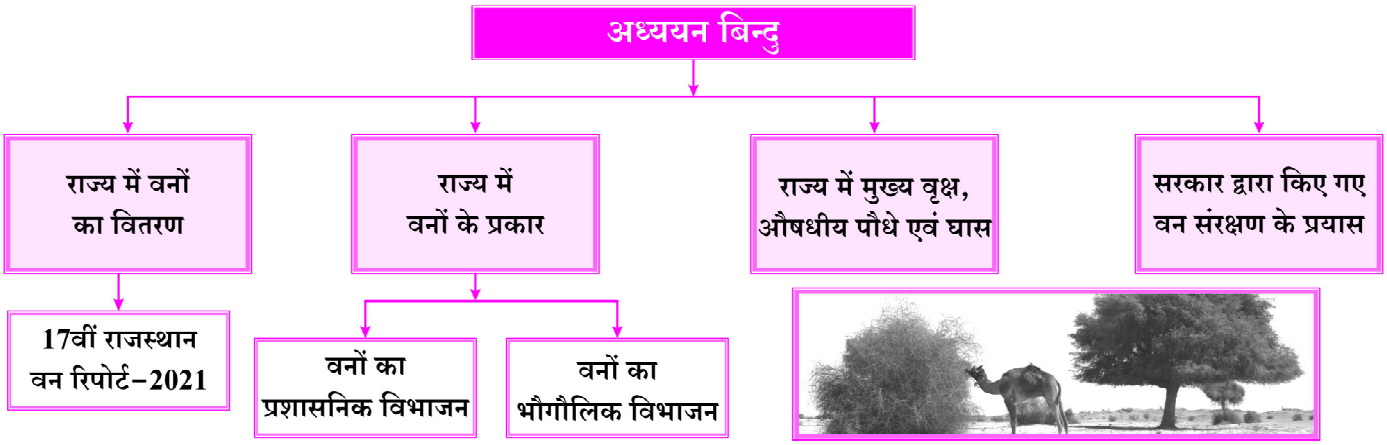

राज्य में वनों का वितरण

- राजस्थान की भौतिक दशाएँ एवं जलवायु इस प्रकार की है कि यहाँ भारत के अन्य राज्यों की तुलना में वनों का विस्तार अपेक्षाकृत रूप से कम है।
- आर्थिक समीक्षा 2021-22 के अनुसार राज्य में कुल घोषित वन क्षेत्र 32,864.62 वर्ग कि.मी. है जो कि राज्य के कुल भौगोलिक क्षेत्र का 9.60 प्रतिशत है। जबकि राष्ट्रीय वन नीति (1988) के अनुसार जीवन दायिनी तंत्र को बचाने के लिए एक तिहाई भूमि पर वन होने चाहिए।
- राजस्थान में वन आच्छादित क्षेत्र (वनावरण) 4.87 प्रतिशत है जो कि वन क्षेत्र तथा उसके बाहर अवस्थित है। (आर्थिक समीक्षा 2021-22)
- भारतीय वन सर्वेक्षण की रिपोर्ट के अनुसार, द्विवर्षीय सर्वेक्षण अवधि 2019-21 में राज्य के वनाच्छादित क्षेत्र में **25.45 वर्ग कि.मी.** की वृद्धि दर्ज की गई है। (स्रोत–आर्थिक समीक्षा 2021-22)
- राजस्थान में अपेक्षाकृत सघन वन क्षेत्र मुख्यतः प्रतापगढ़, उदयपुर, करौली, बारां, सिरोही, बूँदी, कोटा, चित्तौड़गढ़, बाँसवाड़ा, सवाईमाधोपुर, धौलपुर, अलवर एवं झालावाड़ जिलों में है। इन जिलों में 20% से अधिक भूमि पर वन पाए जाते है।
- राजस्थान के शुष्क क्षेत्र में स्थित जिलों चूरू, जोधपुर, नागौर एवं जैसलमेर आदि में अपने कुल भौगोलिक क्षेत्र के 2% से भी कम क्षेत्र में वन हैं।
- राजस्थान में वनों के कम विस्तार का कारण यहाँ कम वर्षा होना, उच्च तापमान, मरुस्थली क्षेत्रों का अधिक विस्तार, वनोन्मूलन एवं अनियंत्रित पशुचारण है।
- राजस्थान के दक्षिणी एवं दक्षिणी पूर्वी भागों में अधिकांश वनों का विस्तार है, जबकि पश्चिमी भाग में अत्यंत कम वन पाए जाते हैं।
- प्रशासनिक दृष्टिकोण से राजस्थान में **13 वन मण्डल** हैं–जयपुर, अजमेर, कोटा, बूँदी, बारां, झालावाड़, भरतपुर, टोंक, जोधपुर, उदयपुर, चित्तौड़गढ़, सिरोही, बाँसवाड़ा।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा वन मण्डल **जोधपुर** तथा सबसे छोटा वनमण्डल **सिरोही** है।

5 राजस्थान में वन्य जीव-जन्तु, वन्य जीव संरक्षण एवं अभयारण्य [Wildlife, Wildlife Conservation and Sanctuary in Rajasthan]

वन्य जीव जन्तु क्षेत्रीय पारिस्थितिकी की उपज होते हैं। ये प्राकृतिक पर्यावरण से सामंजस्य स्थापित कर न केवल स्वयं का अस्तित्व बनाए रखते है, अपितु पारिस्थितिकी तन्त्र को परिचालित करने में भी सहायक होते हैं। बढ़ते शहरीकरण, औद्योगीकरण, जनसंख्या वृद्धि एवं मानव की स्वार्थपरता ने आज इनके अस्तित्व को संकट में डाल दिया है। इसलिए सरकार द्वारा वन्यजीव संरक्षण हेतु राष्ट्रीय उद्यान, वन्यजीव अभयारण्यों, जैविक उद्यान आदि की स्थापना की गई है।

अध्ययन बिन्दु

- राजस्थान में राष्ट्रीय उद्यान
- राजस्थान में वन्यजीव अभयारण्य
- राज्य के कन्जर्वेशन रिजर्व
- राज्य के मृग वन
- अन्य प्रयास
  - नम भूमियाँ
  - जन्तुआलय
  - जैविक उद्यान
  - राज्य के जिला शुभंकर
  - आखेट निषेध क्षेत्र

- राजस्थान के प्राकृतिक स्वरूप में भिन्नता होने के कारण यहाँ अनेक प्रकार के वन्य जीव निवास करते है।
- राजस्थान सरकार द्वारा **1951** में **वन्य जीव संरक्षण अधिनियम** इस दिशा में पहला प्रभावशाली कदम था।
- राजस्थान सरकार द्वारा वर्ष 1955 में राज्य के रियासतकालीन शिकारगाहों को संरक्षित करके वन्यजीव अभयारण्यों का दर्जा प्रदान किया।
- वर्ष **1972** में **भारतीय वन्य जीव संरक्षण अधिनियम** बनाया गया, जिसके तहत राजस्थान में आखेट निषिद्ध क्षेत्र घोषित किए गए एवं शिकार पर पूर्णतः प्रतिबंध लगाया गया।
- 1986 में पर्यावरण संरक्षण द्वारा वन्य जीवों की रक्षा हेतु कानून बनाए गए।
- वर्ष 1973 में देश में **'प्रोजेक्ट टाइगर'** चलाया गया था। वर्तमान में राजस्थान में इस प्रोजेक्ट के तहत 5 टाइगर रिजर्व स्थापित किए गए है।
  (1) रणथम्भौर टाइगर रिजर्व - 1973-74 में स्थापित
  (2) सरिस्का टाइगर रिजर्व - 1978-79 में स्थापित
  (3) मुकन्दरा हिल्स टाइगर रिजर्व - 2013 में स्थापित
  (4) रामगढ़ विषधारी टाइगर रिजर्व - जुलाई 2021 में स्थापित राज्य का चौथा व देश का 52वाँ टाइगर रिजर्व है।
  (5) कुम्भलगढ़ टाइगर रिजर्व - अक्टूबर 2021 में राज्य का पाँचवा टाइगर रिजर्व

Note :-

(1) **करौली टाइगर रिजर्व** राज्य का छठा टाइगर रिजर्व होगा जिसे मंजूरी मिलना अभी शेष है।
(2) राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण के प्रथम निदेशक जोधपुर के **कैलाश सांखला** थे, इन्हें बाघ संरक्षण में अद्वितीय योगदान के कारण **'टाइगर मैन ऑफ इंडिया'** भी कहा जाता है।
(3) कैलाश सांखला के द्वारा 'द स्टोरी ऑफ इंडियन टाईगर', 'टाईगरलैण्ड', रिटर्न ऑफ द टाईगर', 'गार्डन ऑफ गॉड-द वाटरबर्ड सेंचुरी एट भरतपुर' आदि पुस्तके लिखी गई।

- **मई 2022** में **राज्य का पहला बर्ड पार्क-गुलाबबाग (उदयपुर)** को बनाया गया है। इसमें कुल 28 प्रजातियों के पक्षियों को रखा गया है।

6 राजस्थान में मृदाएँ एवं मृदा संरक्षण
[Soil and Soil Conservation in Rajasthan]

पृथ्वी की मूलभूत चट्टानों के ऊपरी परत के अपक्षिवित (Loose) पदार्थ, ह्यूमस एवं अन्य जलवायनिक प्रभावों से विकसित महीन कणयुक्त संरचना जो पौधों की उत्पत्ति एवं विकास में सहायक होती है, मृदा कहलाती है।

अध्ययन बिन्दु

- राजस्थान में मृदा की उत्पत्ति
- राजस्थान में मृदा का वर्गीकरण
  - सामान्य वर्गीकरण
    - जलोढ़/कच्छारी मृदा
    - लाल एवं पीली मृदा
    - लाल-लोमी मृदा
    - लाल व काली मृदा
    - मध्यम काली मृदा
    - भूरी रेतीली मृदा
    - रेतीली मृदा
    - पर्वतीय मृदा
  - रासायनिक संरचना के आधार पर वैज्ञानिक वर्गीकरण
    - एरिडी सोइल्स
    - अल्फी सोइल्स
    - एण्टी सोइल्स
    - इनसेप्टी सोइल्स
    - वर्टी सोइल्स
  - कृषि विभाग द्वारा मृदा का वर्गीकरण
    - अध्याय में तालिका दी गई है।
- राजस्थान में मृदा समस्याएँ एवं मृदा संरक्षण के उपाय

राजस्थान में मृदा की उत्पत्ति

- राजस्थान की अधिकांश मृदाएँ **जलोढ़** (जल द्वारा बहाकर लाई गई) एवं **वातोढ़** (वायु द्वारा जमा की गई) है।
- टर्शियरी युग के प्रारंभ में यहाँ जलोढ़ मैदानों की उत्पत्ति हुई।
- विगत 40-50 हजार वर्षों में राज्य की जलवायु प्रायः शुष्क रही है इसी कारण जलोढ़ मैदान वातीय मैदानों में बदल गए तथा संपूर्ण पश्चिमी क्षेत्र में रेतीला मरुस्थल हो गया।
- राजस्थान का दक्षिण-पूर्वी पठार मालवा के पठार का हिस्सा है, जहाँ काली तथा कहीं-कहीं लाल मृदा है।
- चम्बल, माही, बनास, लूनी आदि नदियों की घाटियों में उपजाऊ मृदा का जमाव हुआ है।
- राज्य की मिट्टियाँ मूलतः **निर्वासित एवं अवशिष्ट** प्रकार की है यहाँ की मिट्टियों में अत्यधिक क्षेत्रीय विविधता है।

राज्य की मृदाओं का सामान्य वर्गीकरण

(1) जलोढ़/कच्छारी मृदा

- इस मृदा का विस्तार पूर्वी राजस्थान की नदियों के मैदानों एवं घाटियों में है जिसके अन्तर्गत भरतपुर, धौलपुर, दौसा, जयपुर, टोंक एवं सवाई माधोपुर जिले आते हैं।
- इस प्रकार की मृदा में **चूना**, **फास्फोरिक अम्ल** तथा **ह्यूमस** की कमी होती है।
- इस मृदा का रंग कहीं लाल तो कहीं भूरा है। **भूरी कच्छारी मृदा** अलवर, भरतपुर तथा गंगानगर के घग्घर प्रदेश में मिलती है।
- इस मृदा में गेहूँ, जौ, ज्वार, सरसों, कपास आदि की कृषि होती है।

7 राजस्थान की प्रमुख फसलें [Major Crops of Rajasthan]

राजस्थान में कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र से जुड़े आँकड़े एवं योजनाएँ नवीनतम आर्थिक समीक्षा वर्ष 2021-22 के अनुसार अपडेट किए गए हैं।

अध्ययन बिन्दु

- राजस्थान में कृषि फसलों के प्रकार, वितरण एवं उत्पादन
  - खाद्यान्न फसलें
  - तिलहन/दलहनी फसलें
  - व्यापारिक फसलें
  - बागवानी फसलें
  - मौसम के आधार पर कृषि उपजों का वर्गीकरण
- राज्य के कृषि जलवायु प्रदेश
- राज्य में कृषि के विविध प्रकार एवं कृषि विकास
- नवीनतम आर्थिक समीक्षा 2021-22 के अनुसार राज्य में कृषि परिदृश्य
  - राज्य के GSVA में कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र का योगदान
  - राजस्थान में भू-उपयोग
  - वर्तमान में कृषि उत्पादन की स्थिति
  - प्रचलित जोत धारक
  - मानसून की स्थिति
  - महत्वपूर्ण योजनाएँ

राजस्थान में कृषि फसलों का वितरण एवं उत्पादन

❖ राजस्थान में जलवायु की अत्यधिक क्षेत्रीय विविधता होने के कारण यहाँ उत्पादित होने वाली कृषि उपजों में अत्यधिक विविधता है। राजस्थान में उत्पादित कृषि उपजों को मौटेतौर पर निम्न श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है—

- खाद्यान्न फसलें
- तिलहन एवं दलहनी फसलें
- व्यापारिक फसलें
- बागवानी फसलें

राज्य में खाद्यान्न फसलें

(1) गेहूँ

❖ गेहूँ उत्पादन में राजस्थान भारत का 5वाँ राज्य है। राज्य की कुल कृषिगत भूमि के 9.5% भाग पर गेहूँ बोया जाता है।

❖ गेहूँ हेतु सामान्यतः 50-100 सेमी. वर्षा वाले क्षेत्र उपयुक्त होते हैं। राज्य में नहरी सिंचित क्षेत्रों एवं जहाँ नलकूपों से सिंचाई होती है। वहाँ प्रमुखतया गेहूँ उत्पादित किया जाता है।

❖ राज्य में गेहूँ का सर्वाधिक उत्पादन **गंगानगर** में होता है। इसके अतिरिक्त हनुमानगढ़, अलवर, जयपुर, बीकानेर, नागौर, जोधपुर, भरतपुर, सवाई माधोपुर, हाड़ौती क्षेत्र एवं चित्तौड़गढ़ प्रमुख गेहूँ उत्पादक जिले हैं।

❖ **प्रमुख किस्में**—कल्याण सोना, सोनालिका, मंगला, गंगा सुनहरी, दुर्गापुरा-65, खार्चिया-65, लाल बहादुर, राजस्थान 3077, राजस्थान 821, 1114, 376, 911, कोहिनूर, चम्बल-65, शरबती, मैक्सियन, राजस्थान 3070 एवं W.H.-1147 आदि।

❖ वर्ष 1984-85 में राज्य में गेहूँ उत्पादन जहाँ 27.92 लाख टन था वहीं 2018-19 में यह बढ़कर 119.62 लाख टन हो गया है, जो कि उत्पादन में पर्याप्त वृद्धि को दर्शाता है।

8 जनसंख्या, जनसंख्या-घनत्व, साक्षरता और लिंगानुपात [Population, Population-Density, Literacy and Sex Ratio]

जनसंख्या से अभिप्राय किसी निश्चित स्थान में एक निश्चित समय में रहने वाले व्यक्तियों की कुल संख्या से होता है। जनसंख्या किसी भी देश या राज्य का महत्त्वपूर्ण मानव संसाधन है एवं सामाजिक अध्ययन का आधारभूत तत्व है, जिसके अन्तर्गत निम्नलिखित बिन्दु पर विचार किया जाता है।

जनसंख्या के अध्ययन बिन्दु

- **जनसंख्या का आकार वितरण एवं घनत्व** — इसके अन्तर्गत व्यक्तियों की कुल संख्या (पुरुष, महिला व बच्चे) तथा किसी स्थान पर कितने व्यक्ति निवास करते हैं आदि का अध्ययन किया जाता है।
- **जनसंख्या वृद्धि एवं जनसंख्या परिवर्तन** — किसी स्थान पर जनसंख्या में निश्चित समयावधि में होने वाली जनसंख्या वृद्धि तथा उसमें परिवर्तन का अध्ययन किया जाता है।
- **जनसंख्या के गुण एवं विशेषताएँ** — व्यक्तियों की उम्र, लिंगानुपात, उनकी साक्षरता, ST/SC की संख्या, धार्मिक संरचना, आदि का अध्ययन किया जाता है।

राजस्थान की जनसंख्या का आकार एवं वितरण

- 2011 की जनगणना के अंतिम आँकड़ों के अनुसार राजस्थान की जनसंख्या **6,85,48,437** अंकित की गई है, जो कि भारत की जनसंख्या का **5.67%** है।
- जनसंख्या की दृष्टि से राजस्थान भारत का **सातवाँ** बड़ा राज्य है। राजस्थान से बड़े 6 राज्यों की स्थिति को निम्नलिखित तालिका द्वारा समझा जा सकता है—

क्र.सं.	सर्वाधिक जनसंख्या वाले राज्य	देश की कुल जनसंख्या में योगदान
1.	उत्तर प्रदेश	16.50%
2.	महाराष्ट्र	9.28%
3.	बिहार	8.58%
4.	पश्चिम बंगाल	7.55%
5.	मध्य प्रदेश	6.00%
6.	तमिलनाडु	5.96%
7.	राजस्थान	5.67%

- राजस्थान में जनसंख्या का **वितरण अत्यधिक असमान** है, जिसका प्रमुख कारण राज्य की विषम भौगोलिक परिस्थितियाँ एवं आर्थिक विकास में भिन्नता है।
- राज्य को चार भौतिक प्रदेशों में बाँटा गया है, जिसमें जनसंख्या का वितरण इस प्रकार है—

क्र. स.	भौतिक प्रदेश का नाम	जनसंख्या का प्रतिशत वितरण	भौतिक प्रदेश का क्षेत्रफल
1.	पश्चिमी मरुस्थली प्रदेश	40%	61.11%
2.	अरावली प्रदेश	10%	9%
3.	पूर्वी मैदानी प्रदेश	39%	23%
4.	दक्षिण–पूर्वी पठारी प्रदेश	11%	6.89%

9 राजस्थान की जनजातियाँ एवं जनजातीय क्षेत्र [Tribes and Tribal Areas of Rajasthan]

सामान्यतः सामाजिक एवं शैक्षणिक रूप से पिछड़े, दुर्गम स्थानों पर निवास करने, स्वच्छन्द वातावरण एवं विशिष्ट संस्कृति रखने वाले तथा अपनी मूल पहचान को सदियों से कायम रखने वाले समुदाय जनजाति या आदिवासी नाम से जाने जाते हैं। राजस्थान की जनजातियों भील, मीणा, गरासिया, सहरिया, साँसी, डामोर, कंजर प्रमुख हैं, जिनके सामाजिक संगठन, आर्थिक क्रियाकलाप एवं रीति-रिवाजों का उल्लेख किए बिना राजस्थान को संपूर्णता में नहीं जाना जा सकता है।

अध्ययन बिन्दु

- राजस्थान की जनजातियों का भौगोलिक वितरण एवं प्रमुख जनजातीय क्षेत्र

- राज्य की प्रमुख जनजातियाँ एवं उनकी सामाजिक-आर्थिक संगठन
  - भील
  - मीणा
  - गरासिया
  - सहरिया
  - डामोर
  - साँसी
  - कंजर
  - कथौड़ी
  - कोली-ढोर आदि
- जनजातियों के कल्याण हेतु चलाए गए कार्यक्रम
  - वर्ष 2021-22 में जनजाति क्षेत्रीय विकास योजना की उपलब्धियाँ
  - जनजाति उपयोजना
  - माडा क्लस्टर
  - सहरिया विकास कार्यक्रम
  - बिखरी जाति विकास कार्यक्रम
  - राजस्थान SC/ST वित्त एवं विकास निगम
  - जनजातियों हेतु किए गए विभिन्न संस्थागत प्रावधान

❖ राजस्थान भारत के सर्वाधिक जनजाति जनसंख्या वाले राज्यों में **चौथे स्थान** पर है। राज्य में 2011 की जनगणना के अनुसार 9,238534 अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या निवास करती है।

❖ 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान में अनुसूचित जनजाति राज्य की कुल जनसंख्या का **13.48 प्रतिशत** है। कुल जनजाति जनसंख्या का **94.6%** भाग ग्रामीण क्षेत्रों में रहता है।

❖ संविधान के **अनुच्छेद 342** के अनुसार राष्ट्रपति जनजातियों को अधिसूचित करते है। राजस्थान में वर्तमान में कुल **12 जनजातियाँ** अधिसूचित हैं।

1. मीणा	2. भील	3. गरासिया
4. सहरिया	5. डामोर	6. भीलमीणा
7. कोलीढोर	8. पटेलिया	9. नायकड़ा
10. कथौड़ी	11. कोकना	12. धानका

Note :-

(1) राज्य में **मीणा** जनजाति सर्वाधिक संख्या में जबकि **कोलीढ़ोर** सबसे कम संख्या में निवास करती है।

(2) **सांसी** एवं **कंजर** को जनजातियों में अधिसूचित नहीं किया गया है। यद्यपि इनकी विशिष्ट संस्कृति के कारण इन्हें जनजातियों की श्रेणी में ही पढ़ा जाता है।

❖ राजस्थान में सर्वाधिक अनुसूचित जनजाति प्रतिशत वाले जिले क्रमशः **बाँसवाड़ा** (76.38%), **डूँगरपुर** (70.82%), **प्रतापगढ़** (63.42%) एवं **उदयपुर** (49.71%) (कुल जनसंख्या के हिसाब से उदयपुर में सर्वाधिक जनजातीय जनसंख्या (15,25,289) निवास करती है)

❖ राज्य में न्यूनतम जनजातीय जनसंख्या वाला जिला **बीकानेर** है। यहाँ मात्र 0.33% जनजातीय जनसंख्या निवास करती है।

10 राजस्थान में खनिज संसाधन-धात्विक एवं अधात्विक खनिज (Mineral Resources in Rajasthan-Metallic and Non-Metallic Minerals)

राजस्थान की भूगर्भीय संरचना इस प्रकार की है कि यहाँ अनेक प्रकार के खनिज पाये जाते हैं। जिसके कारण राजस्थान को **'खनिजों का अजायबघर'** (Museum of Minerals) कहा जाता है। राज्य में **82** प्रकार के खनिजों के भण्डार हैं। इनमें से **57 खनिजों** का वर्तमान में खनन किया जा रहा है। खनिजों की उपलब्धता एवं उत्पादन की दृष्टि से राजस्थान का अरावली क्षेत्र सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है।

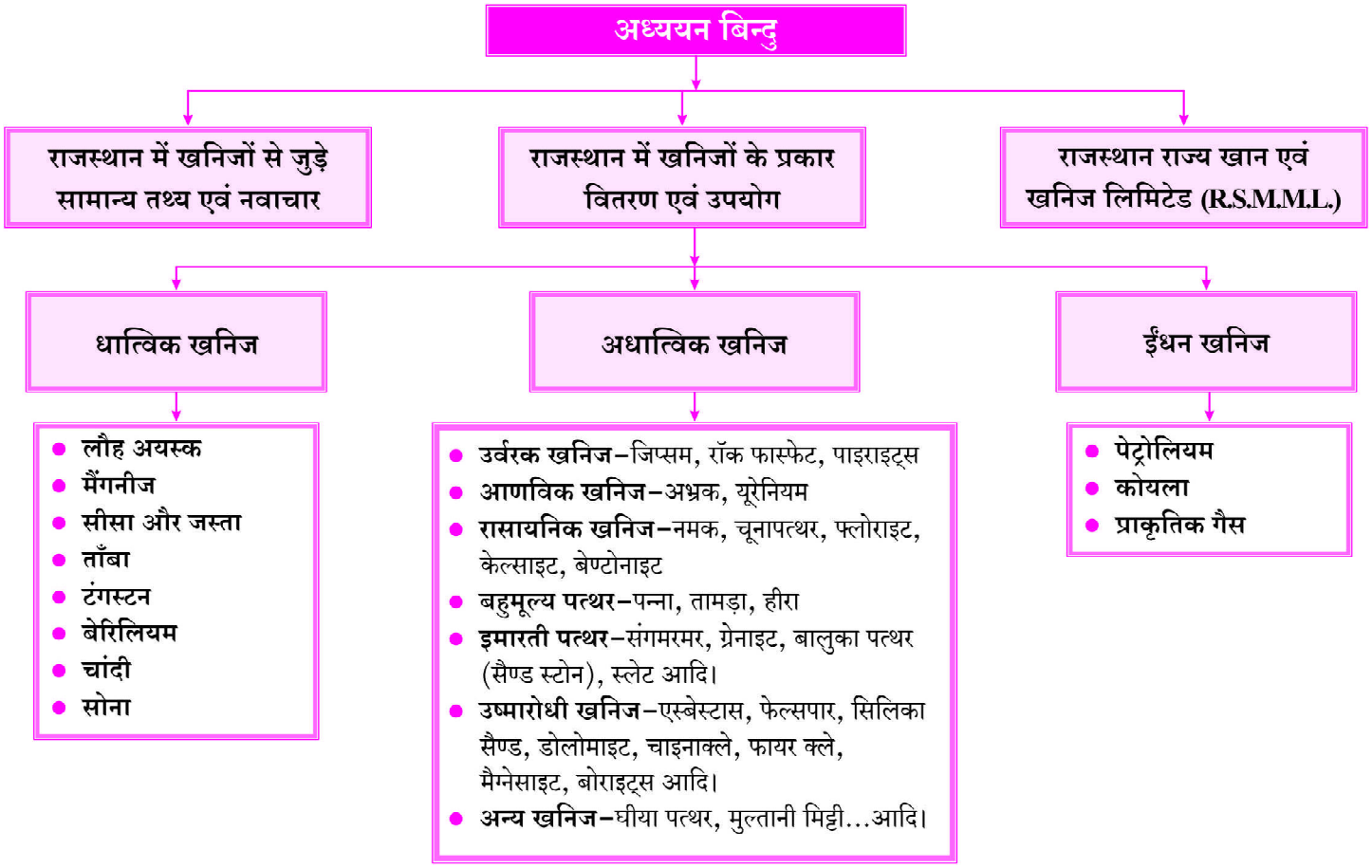

राजस्थान में खनिजों से जुड़े सामान्य तथ्य एवं नवाचार

- राजस्थान का खनिज भण्डार के दृष्टिकोण से देश में झारखण्ड के बाद दूसरा स्थान है। जबकि खनिजों की उपलब्धता की दृष्टि से मध्यप्रदेश व छत्तीसगढ़ के बाद तीसरा बड़ा राज्य है।
- राजस्थान में **19 प्रधान खनिज** है, जिनके लिए 174 खनन पट्टे जारी किए गए हैं जबकि अप्रधान खनिजों के 15280 खनन पट्टे एवं 17577 खदान लाइसेंस वर्तमान में विद्यमान हैं। वर्तमान में **ई–नीलामी** प्रक्रिया द्वारा खनन पट्टों का आवंटन किया जाता है।
- राजस्थान **सीसा एवं जस्ता अयस्क**, **सलेनाईट** और **वॉलेस्टोनाइट** का एकमात्र उत्पादक राज्य है।
- देश में चाँदी, केल्साइट और जिप्सम का लगभग पूरा उत्पादन राजस्थान में होता है।
- राजस्थान देश में बॉल क्ले, फॉयर क्ले, फॉस्फोराइट, ओकर (गेरु) स्टेटाइट एवं फेल्सपार का भी प्रमुख उत्पादक हैं।
- राज्य का आयामी और सजावटी पत्थर यथा–संगमरमर, सेण्डस्टोन, ग्रेनाइट आदि के उत्पादन में भी देश में प्रमुख स्थान है।

11 राजस्थान के ऊर्जा संसाधन : परम्परागत एवं गैर-परम्परागत
[Energy Resources of Rajasthan : Conventional & Non-Conventional]

सम्पूर्ण अध्याय आर्थिक समीक्षा 2021-22 के अनुसार अपडेट है।

ऊर्जा संसाधन किसी भी देश या प्रदेश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ कहलाते हैं, क्योंकि अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों में ऊर्जा एक अनिवार्य और आधारभूत संसाधन है। राजस्थान में ऊर्जा के परम्परागत एवं गैर-परम्परागत दोनों ही प्रकार के स्रोत उपलब्ध है। अतः इस क्षेत्र में हुई प्रगति को संपूर्णता में समझने की आवश्यकता है।

अध्ययन बिन्दु

- राजस्थान में ऊर्जा संसाधनों का विकास एवं वर्तमान नवाचार
- परम्परागत ऊर्जा संसाधन
  - कोयला
  - पेट्रोलियम
  - प्राकृतिक गैस
  - परमाणु ऊर्जा
  - जल विद्युत्
- गैर-परम्परागत ऊर्जा संसाधन
  - पवन ऊर्जा
  - सौर ऊर्जा
  - बायो गैस
  - बॉयोमास ऊर्जा
- ऊर्जा क्षेत्र की प्रमुख योजनाएँ
  - मुख्यमंत्री किसान मित्र ऊर्जा योजना
  - ऊर्जा संरक्षण कार्यक्रम
  - उदय योजना
  - P.M. कुसुम योजना

राजस्थान में ऊर्जा संसाधनों का विकास एवं वर्तमान नवाचार

- स्वतंत्रता के पश्चात् राजस्थान में केवल 42 गाँव विद्युतीकृत थे एवं कुल स्थापित विद्युत क्षमता मात्र **13.27 मेगावाट** थी।
- **1 जुलाई 1957** को **'राजस्थान राज्य विद्युत बोर्ड'** (RSEB) के गठन के साथ राज्य में बिजली क्षेत्र को प्राथमिकता मिली। यह राज्य में बिजली उत्पादन, हस्तांतरण एवं वितरण की मुख्य एजेंसी थी। लेकिन **19 जुलाई 2000** को ऊर्जा क्षेत्र के बुनियादी ढाँचे को मजबूत करने और वितरण कार्यों को अलग करने के लिए RSEB को निम्नलिखित 5 अलग-अलग कंपनियों में विभाजित कर दिया गया।
  (1) राजस्थान राज्य विद्युत उत्पादन निगम लिमिटेड, जयपुर।
  (2) राजस्थान राज्य विद्युत प्रसारण निगम लिमिटेड, जयपुर।
  (3) जयपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड, जयपुर।
  (4) अजमेर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड, अजमेर।
  (5) जोधपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड, जोधपुर।

Note :– अंतिम तीनों कंपनियाँ क्रमशः 12, 11 एवं 10 जिलों में विद्युत वितरण करती हैं।

- **राजस्थान विद्युत नियामक प्राधिकरण (RERA)**—की स्थापना **2 जनवरी 2000** में हुई, इसका मुख्यालय **जयपुर** में है। RERA का मुख्य कार्य-राज्य में विद्युत कंपनियों को लाइसेंस देना, विद्युत की दर तय करना एवं विद्युत कंपनियों का नियमन और नियंत्रण करना है।
- राज्य सरकार द्वारा रतनजोत, करंज, जेड्रोफा आदि तेलीय पौधों की खेती को बढ़ावा देने हेतु **वर्ष 2007** में **राजस्थान बायोफ्यूल नीति** घोषित कर अलग से बायोफ्यूल **प्राधिकरण** का गठन किया गया।
- ऊर्जा क्षेत्र में बायोडीजल को बढ़ावा देने हेतु **'राजस्थान बायोडीजल नियम 2019'** बनाया गया, जिसके अन्तर्गत अब तक 11 बायोडीजल उत्पादक एवं 88 मोबाईल रिटेल आउटलेट्स का पंजीकरण किया जा चुका है।
- राजस्थान में दिसम्बर, 2021 तक ऊर्जा की कुल अधिष्ठापित क्षमता बढ़कर **23321.40 मेगावाट** हो गई है।
- राज्य में शत प्रतिशत ग्रामीण विद्युतीकरण के लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु दिसम्बर, 2021 तक राज्य सरकार द्वारा **43,201** गाँवों एवं **1.14 लाख** ढाणियों का विद्युतीकरण किया जा चुका है।

12 राजस्थान के पर्यटन स्थल [Tourist Places of Rajasthan]

पर्यटन की दृष्टि से राजस्थान, भारत के प्रमुख आकर्षक स्थलों में से एक है तथा विश्व पर्यटन मानचित्र पर अपना विशिष्ट स्थान रखता है। यहाँ देशी-विदेशी पर्यटकों हेतु अनेक आकर्षण के केन्द्र है। आँकड़े बताते हैं कि भारत आने वाला हर तीसरा पर्यटक राजस्थान आता है। राज्य में पर्यटन को बढ़ावा देने हेतु **पर्यटन विभाग** की स्थापना **1956** में की गई तथा **1989** में **मोहम्मद युनुस समिति** की सिफारिश पर पर्यटन को उद्योग का दर्जा दिया गया, राजस्थान ऐसा करने वाला **देश का प्रथम राज्य** बना।

राजस्थान में शाही रेलगाड़ियाँ, किलें, महल, हवेलियाँ, झीलें, रेत के धोरे, मंदिर, अरावली के प्राकृतिक स्थल, एडवेंचर ट्यूरिज्म आदि पर्यटकों को आकर्षित करते हैं और प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से राज्य के लिए रोजगार एवं राजस्व का सृजन करते है।

अध्ययन बिन्दु

- राजस्थान में पर्यटन का विकास महत्वपूर्ण संस्थाएँ
- राज्य में पर्यटन विभाग द्वारा आयोजित उत्सव/महोत्सव
- वर्ष 2021-22 में पर्यटन में राज्य की प्रमुख उपलब्धियाँ
  - पर्यटन विभाग की प्रमुख उपलब्धियाँ एवं कार्य
  - कोविड प्रबंधन हेतु किए गए निर्णय एवं नवाचार
  - वर्ष 2021 में प्राप्त महत्वपूर्ण पुरस्कार
- राजस्थान में पर्यटन परिपथ
- राजस्थान के प्रमुख पर्यटन केन्द्र

राजस्थान में पर्यटन का विकास एवं महत्त्वपूर्ण संस्थाएँ

- ❖ राजस्थान में 1956 में स्थापित '**पर्यटन विभाग**' पर्यटन की व्यवस्था हेतु राज्य सरकार की नोड़ल एजेन्सी है।
- ❖ **पर्यटन निदेशालय-1955** द्वारा पर्यटकों के आवास, परिवहन एवं साहित्य प्रकाशन की व्यवस्था की जाती है।
- ❖ राज्य में पर्यटन स्थलों के संरक्षण एवं विकास हेतु **1 अप्रैल 1979** को '**राजस्थान पर्यटन विकास निगम (RTDC)**' की स्थापना की गई, जिसका मुख्यालय-**जयपुर** है।
- ❖ RTDC का नया पर्यटन लोगो—''**राजस्थान: भारत का अतुल्य राज्य**''
- ❖ राज्य में पर्यटन गतिविधियों हेतु मानव संसाधन का विकास करने हेतु 1966 में ''**राजस्थान इंस्टीट्यूट ऑफ ट्यूरिज्म एंड ट्रेवल मैनेजमेंट (रिट्टमैन)**'' की स्थापना की गई, इसका मुख्यालय भी **जयपुर** में है।
- ❖ वर्ष 2000 में मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में '**राज्य पर्यटन सलाहकार मण्डल**' की स्थापना की गई।
- ❖ वर्ष 2001 में मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में '**राजीव गाँधी पर्यटन विकास मिशन**' की स्थापना की गई, जिसका उद्देश्य पर्यटन नीतियों को प्रभावी तरीके से लागू करना था।
- ❖ राज्य में पर्यटकों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए तीन **पर्यटक पुलिस स्टेशन** खोले गए है-**जयपुर, उदयपुर** और **जोधपुर**।
- ❖ राज्य में सर्वाधिक विदेशी पर्यटक **फ्रांस** से आते है।
- ❖ यदि संख्या के दृष्टिकोण से देखे तो **पुष्कर (अजमेर)** में सर्वाधिक पर्यटक (देशी-विदेशी) आते है। जबकि केवल सर्वाधिक विदेशी पर्यटक **जयपुर** में आते हैं।

Note :- कैलैण्डर वर्ष 2021 के दौरान **220.24 लाख** पर्यटकों ने राजस्थान में भ्रमण किया, जिनमें **219.89** लाख **स्वदेशी** एवं **0.35** लाख **विदेशी** पर्यटक शामिल हैं।

13 राजस्थान में यातायात के साधन [Means of Transport in Rajasthan]

यह अध्याय आर्थिक समीक्षा 2021-22 के अनुसार अपडेट किया गया है।

किसी भी देश या प्रदेश की अर्थव्यवस्था के लिए यातायात के साधन शरीर की धमनियों एवं शिराओं की भाँति काम करते हैं। राजस्थान में स्वतंत्रता के बाद तीव्र गति से परिवहन के साधनों का विकास हुआ है, जिनमें सड़क, रेलवे एवं वायु परिवहन प्रमुख है। यद्यपि राज्य में अभी भी इनके विकास की अपार संभावनाएँ हैं।

अध्ययन बिन्दु

- सड़क परिवहन
- रेल-परिहवन
- वायु परिवहन

सड़क परिवहन

- राजस्थान में वर्ष 1949 में सड़कों की लम्बाई 13,553 किमी. थी, जो उत्तरोत्तर बढ़ती हुई **मार्च 2021** तक **2,72,959.28** कि.मी. हो गई है।
- स्वतंत्रता के बाद प्रमुख वर्षों में सड़कों के विकास निम्न तालिका द्वारा समझा जा सकता है:-

वर्ष	सड़कों की कुल लम्बाई
1950-51	17,339 कि.मी.
1990-91	58,350 कि.मी.
2000-01	87,462 कि.मी.
2010-11	1,89,402 कि.मी.
2020-21	2,72,959 कि.मी.

- **31 मार्च, 2021** तक राज्य में प्रति 100 वर्ग किलोमीटर पर सड़कों का घनत्व **79.76 कि.मी.** है, जबकि राष्ट्रीय सड़क घनत्व प्रति 100 वर्ग किलोमीटर पर **161.71 कि.मी.** है।
- वर्तमान में राज्य सरकार द्वारा 2011 की जनगणना के अनुसार **'छोटे गाँवों के लिए सड़क संपर्क कार्यक्रम'** के तहत प्रथम चरण में 500 या अधिक आबादी वाले 330 गाँवों को सड़कों से जोड़ने का कार्य प्रगति पर है। दिसम्बर, 2021 तक इनमें **110** गाँवों को जोड़ा जा चुका है।
- अगले पाँच वर्षों में प्रत्येक ग्राम पंचायत में **'वाल टू वाल विकास पथ'** का निर्माण किया जायेगा। प्रथम चरण में निर्धारित 183 में से 168 ग्राम पंचायतों में कार्य पूर्ण हो चुका है।
- 2021-22 की बजट घोषणा के अनुसार प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र में **5 करोड़ रु.** की लागत से **मिसिंग लिंक** और **नॉन-पेचेबल सड़कों** का कार्य किया जाना है।
- राज्य की कुल 2,72,959.28 कि.मी. सड़कों में से 1,70,394 कि.मी. सड़कों का रख-रखाव सार्वजनिक निर्माण विभाग द्वारा किया जाता है।
- सार्वजनिक निर्माण विभाग द्वारा 99% सड़क कार्य ग्रामीण क्षेत्रों में एवं 1% सड़क कार्य शहरी क्षेत्रों में किए जा रहे है।

राज्य में 31 मार्च, 2021 तक सड़कों की लम्बाई

क्र. सं.	वर्गीकरण	डामर	मैटल	ग्रेवल	मौसमी	योग
1.	राष्ट्रीय राजमार्ग	9604.26	0.00	5.00	1008.83	**10618.09**
2.	राज्य राजमार्ग	15504.70	4.20	0.00	36.05	**15544.95**
3.	मुख्य जिला सड़क	8779.99	2.00	64.65	117.91	8964.55
4.	अन्य जिला सड़क	46679.56	3085.12	282.68	4698.31	54745.67
5.	ग्रामीण सड़क	142755.31	1484.24	35911.05	2935.42	183086.02
महायोग		**223323.82**	**4575.56**	**36263.38**	**8796.52**	**272959.28**

राज्य के प्रमुख राष्ट्रीय राजमार्ग

राज्य की सड़कों में **मार्च 2021** तक राष्ट्रीय राजमार्गों की कुल लम्बाई **10,618.09 कि.मी.** है। राज्य से गुजरने वाले राष्ट्रीय राजमार्गों का संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार है।

इतिहास एवं संस्कृति [HISTORY AND CULTURE]

1 राजस्थान की प्राचीन सभ्यताएँ : कालीबंगा, आहड़, गणेश्वर, बालाथल, बैराठ इत्यादि

[Ancient Civilizations of Rajasthan: Kalibanga, Ahar, Ganeshwar, Balathal, Bairath etc.]

राजस्थान की यह मरुभूमि विभिन्न प्राचीन सभ्यताओं की जननी रही है। यहाँ पाषाणयुगीन एवं ताम्र पाषाण युगीन सभ्यताओं का उदय हुआ है, जिनमें कालीबंगा, आहड़, गणेश्वर, बैराठ, बागौर आदि प्रमुख हैं। ये सभ्यताएँ न केवल स्थानीय सभ्यता का प्रतिनिधित्व करती हैं अपितु अपनी चित्रकला, मृदभांड शिल्प एवं धातु तकनीकी कौशल के कारण प्राचीन विश्व की अन्य सभ्यताओं के भी संपर्क में थी। नए पाठ्यक्रमानुसार इस अध्याय में चार प्रमुख सभ्यताओं का वर्णन किया गया है।

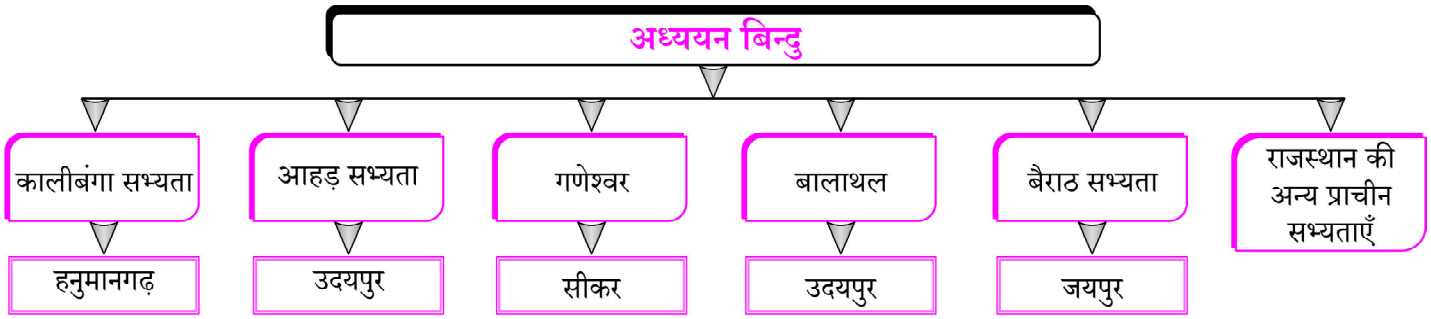

कालीबंगा सभ्यता

- कालीबंगा सैन्धव सभ्यता की **'तीसरी राजधानी'** मानी जाती है। राजस्थान के **हनुमानगढ़** जिले में अवस्थित यह सभ्यता आज से लगभग 6 हजार वर्ष पुरानी मानी जाती है।
- प्राचीन सरस्वती एंव दृषद्वती नदियों (वर्तमान घग्घर नदी क्षेत्र) के मध्य पल्लवित यह सभ्यता- पूर्व हड़प्पाकालीन, हड़प्पाकाल एवं उत्तर हड़प्पाकालीन सभ्यताओं का प्रतिनिधित्व करती है।
- कालीबंगा की खोज सर्वप्रथम 1952 ई. में **'अमलानन्द घोष'** द्वारा की गई तथा उत्खनन कार्य 1960-1969 ई. के मध्य **बी.बी. लाल, बी.के. थापर, एम.डी. खरे** एवं **के.एम. श्रीवास्तव** द्वारा करवाया गया।
- कालीबंगा के उत्खनन में हड़प्पाकालीन सांस्कृतिक युग के पाँच स्तर मिले हैं।
- कालीबंगा का शाब्दिक अर्थ- **''काले रंग की चूड़ियाँ''** है।
- कालीबंगा सभ्यता की सर्वप्रथम व्यवस्थित जानकारी इटली के विद्वान **डॉ.एल.पी. टेसीटोरी** द्वारा दी गई।

कालीबंगा का नगर नियोजन

- कालीबंगा एक विकसित नगरीय सभ्यता थी। यहाँ का नगर सुव्यवस्थित योजनानुसार बसा हुआ था। यह पश्चिमी और पूर्वी दो टीलों पर बसा हुआ था। कालीबंगा में दुर्ग व नगर क्षेत्र दोनों अलग-अलग रक्षा प्राचीर से घिरे हुए थे।

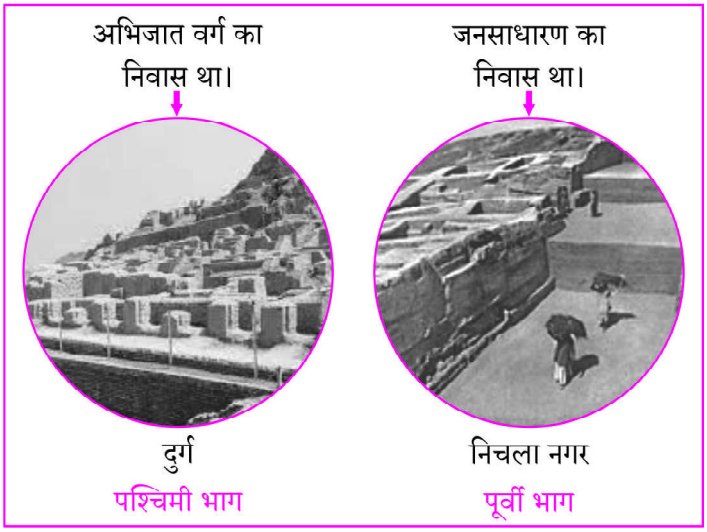

- कालीबंगा की सड़कें पाँच से साढ़े पाँच मीटर चौड़ी थी एवं समकोण पर कटती थीं। सड़कों के किनारे गलियाँ निकली हुई थी; जिन पर आवासीय भवन बने हुए थे।
- मोहनजोदड़ो, हड़प्पा आदि के विपरीत कालीबंगा के घर **कच्ची ईंटों** (धूप मे सुखाई हुई) के बने हैं। कमरो एवं फर्श को चिकनी मिट्टी से लीपा जाता था। लगभग सभी घरों में अपने-अपने कुएँ थे।
- कालीबंगा से सेलखड़ी की मुहरें एवं मिट्टी की मुहरें मिली हैं। जिन पर हड़प्पाकालीन लिपि के समान अक्षर मिले हैं किन्तु इसे अभी तक पढ़ा नहीं जा सका है।

3 राजस्थान के राजवंशों की प्रशासनिक एवं राजव्यवस्था [Administrative and Polity of the Dynasties of Rajasthan]

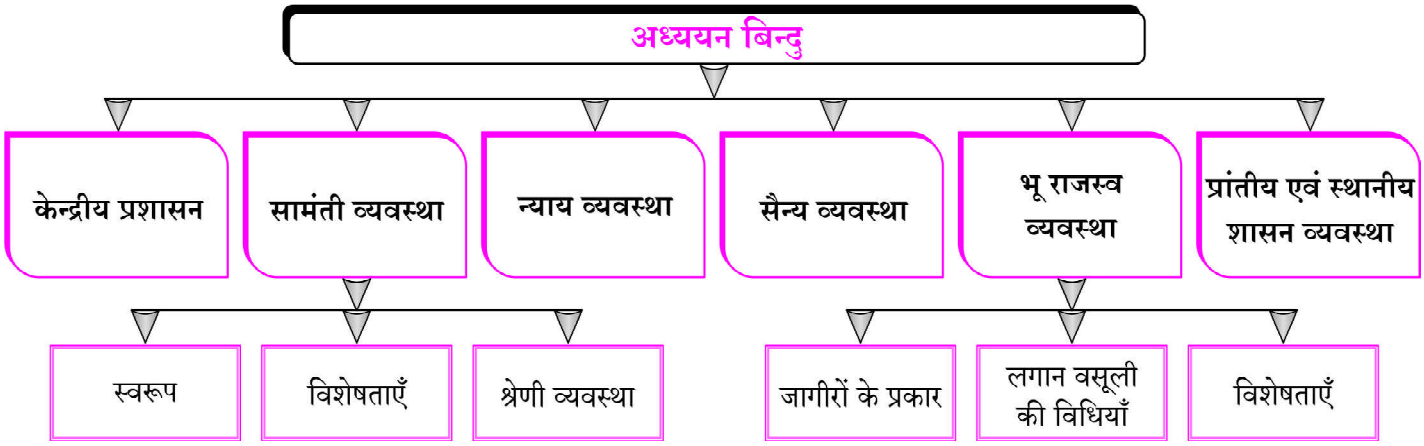

केन्द्रीय प्रशासन

राजा

- राजा सम्पूर्ण प्रशासन की धुरी/केन्द्र होता था। राजा स्वयं में देवत्व का अंश मानते थे एवं महाराजा, परम्भट्टारक, महाराजाधिराज आदि विरुद्ध धारण करते थे।
- राजा सर्वशक्तिमान होते हुए भी स्वेच्छाचारी नहीं हो सकते थे, क्योंकि वे मंत्रिपरिषद्, स्थानीय सरदारों, सामंतों, आदि से परामर्श लेकर निर्णय करते थे साथ ही राजपूताना के शासकों पर धर्म की मर्यादा का बंधन भी था।

युवराज

- केन्द्रीय प्रशासन में राजा के बाद युवराज का स्थान था, जिसे **महाराज कुमार** भी कहते थे। ये युद्ध व शांति के समय राजा का सहायक होता था।
- कभी-कभी राजा अपने जीवनकाल में ही युवराज को सत्ता सौंपकर राज-पाट से संन्यास ले लेता था। जैसे-बप्पा रावल ने राज्य खुमाण को सौंपकर संन्यास ग्रहण कर लिया था।

प्रधान

- यह राजा की मंत्रिपरिषद् का मुखिया होता था एवं राजा का **मुख्य सलाहकार** होता था। इसे **दीवान, मुसाहिब** या **प्रधानमंत्री** भी कहा जाता था।

बक्षी

- यह **सैन्य विभाग का मुखिया** होता था। इसका मुख्य कार्य सेना के लिए रसद की व्यवस्था करना, सेना में अनुशासन बनाए रखना तथा सैन्य प्रशिक्षणों का निरीक्षण करना था।
- बक्षी की सहायता हेतु एक **नायब बक्षी** भी होता था, जिसका मुख्य कार्य सेना व किलों पर होने वाले खर्च व 'रेख' का हिसाब-किताब रखना था।

मुत्सद्दी वर्ग

- मध्यकालीन राजपूताना में प्रशासनिक कार्यों को करने हेतु मुत्सद्दी वर्ग की **पदसोपानिक व्यवस्था** थी। यह वर्ग सामान्य प्रशासन की इकाईयों जैसे- परगनों, तहसीलों, ग्रामों आदि पर नौकरशाहों की तरह नियुक्त किया जाता था।
- प्रारंभ में मुत्सद्दी का पद वंशानुगत नहीं था, किन्तु बाद में यह वंशानुगत हो गया, लेकिन इनकी जागीर वंशानुगत नहीं थी, बल्कि इनकी मृत्यु के बाद उसे 'खालसा' (राजकीय भूमि) घोषित कर दिया जाता था।

शिकदार

- यह गैर सैनिक कर्मचारियों के रोजगार संबंधी कार्य देखता था।

संधिविग्रहिक

- इसका उल्लेख अल्लट के **'सारणेश्वर लेख'** में मिलता है। **'यशस्तिलक चम्पू'** के अनुसार संधिविग्रहिक सभी आदेशों और विदेश के लिए पत्र आदि तैयार करता था। यह कई भाषाओं व लिपियों का ज्ञाता होता था।

4 राजस्थान की स्थापत्य कला : किले, स्मारक, बावड़ी एवं हवेलियाँ इत्यादि
[Architecture of Rajasthan : Forts, Monuments, Stepwells and Havelis etc.]

मानव सभ्यता व संस्कृति के इतिहास में स्थापत्य एक ऐसी श्रृंखला है, जो सदियों की बिखरी हुई कड़ियों को जोड़कर देश और समाज की वास्तविक सांस्कृतिक तस्वीर को प्रस्तुत करती है, प्राचीन व आधुनिक इतिहास की संस्कृतियों के ज्ञान हेतु स्थापत्य की भूमिका अतुलनीय है। शायद इसिलिए राजस्थानी में कहावत प्रचलित है, **''नावं गीतड़ा नूं भीतड़ा सूं रहवे''** अर्थात् स्मृति या तो गीतों में शेष रहती है या स्थापत्य में। राजस्थान की विशेष भौगोलिक स्थिति ने यहाँ के स्थापत्य में विविधता उत्पन्न की है, जो मंदिरों, किलों, महलों एवं हवेलियों के माध्यम से यहाँ के गौरवशाली अतीत को परिभाषित करता है।

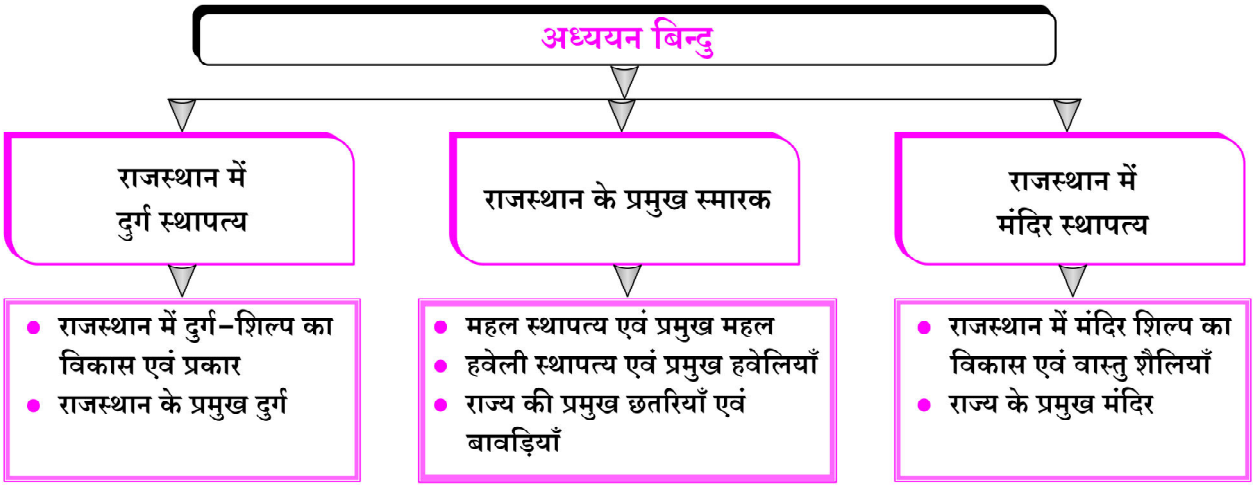

राजस्थान में दुर्ग-स्थापत्य

दुर्ग शिल्प का विकास एवं प्रकार

- संपूर्ण भारतवर्ष में राजस्थान वह प्रदेश है, जहाँ पर महाराष्ट्र व मध्यप्रदेश के बाद सर्वाधिक गढ़ व दुर्ग बने हुए हैं।
- राजस्थान में दुर्गों के स्थापत्य के विकास का प्रथम उदाहरण **कालीबंगा** की खुदाई में मिलता है।
- मौर्य, गुप्त व परवर्ती युग में दुर्ग निर्माण में मंदिरों तथा जलाशयों को प्रधानता दी जाने लगी।
- तुर्क-अफगान शासन की स्थापना के बाद 13वीं सदी से दुर्ग स्थापत्य की परम्परा में एक नया परिवर्तन दिखाई देता है। इस काल में दुर्ग निर्माण में **सुरक्षा का विशेष** ध्यान रखा गया और दुर्ग ऊँची-ऊँची पहाड़ियों पर बनाए गए।
- जब मुगलों के साथ राजपूतों के संबंध मधुर बने तो दुर्ग स्थापत्य में भी परिवर्तन आया। अब राजपूत शासक पहाड़ियों से नीचे आकर समतल मैदान में नगर दुर्गों का निर्माण करने लगे, जैसे- बीकानेर, जयपुर, भरतपुर आदि।
- 'शुक्रनीति' के अनुसार दुर्गों के 9 प्रकार बताए गए हैं—
  (1) **औदक दुर्ग (जलदुर्ग)**—जो दुर्ग विशाल जल राशि से घिरा हो, जैसे-गागरोण दुर्ग।
  (2) **गिरि दुर्ग**—जो ऊँचे पहाड़ पर स्थित हो, राजस्थान के अधिकांश दुर्ग इसी श्रेणी में आते हैं।
  (3) **धान्वन दुर्ग**—मरुभूमि में बना हुआ दुर्ग, जैसे- जैसलमेर दुर्ग।
  (4) **वन दुर्ग**—सघन बीहड़ वन में बना हुआ दुर्ग, जैसे- सिवाना दुर्ग।
  (5) **पारिख दुर्ग**—जिसके चारों ओर बहुत बड़ी खाई हो, जैसे- भरतपुर व बीकानेर दुर्ग।
  (6) **एरण दुर्ग**—जिनके मार्ग खाई, कांटों व पत्थरों से दुर्गम हों, जैसे- चित्तौड़ व जालौर के दुर्ग।
  (7) **पारिध दुर्ग**—जिस दुर्ग के चारों ओर बड़ी-बड़ी दीवारों का परकोटा हो, जैसे- चित्तौड़, जैसलमेर।
  (8) **सैन्य दुर्ग**—वह दुर्ग जिसमें युद्ध की व्यूह रचना में चतुर सैनिक रहते हों।

5 राजस्थान के मेले व त्योंहार [Fairs and Festivals of Rajasthan]

सम्पूर्ण भारतवर्ष में राजस्थान अपनी बहुरंगी संस्कृति के लिए प्रसिद्ध है, जो यहाँ के मेलें व त्योंहारों, में प्रतिबिम्बित होती है। यहाँ वर्षभर मेलों का आयोजन होता है, जो सामाजिक समरसता, लोककला एवं पर्यटन को बढ़ावा देते हैं। यहाँ एक कहावत प्रचलित है- **''सात वार नौ त्योंहार''**, ये पर्व व त्योंहार लोगों के जीवन में खुशी और उमंग के परिचायक हैं।

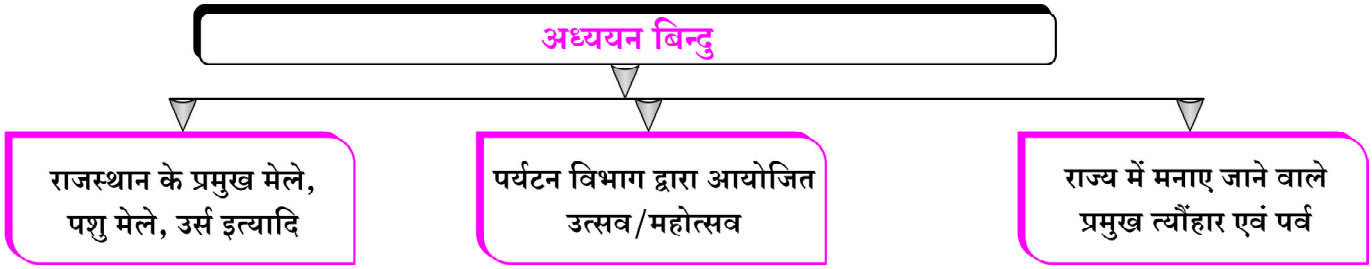

राजस्थान के प्रमुख मेले

पुष्कर मेला

- अजमेर का पुष्कर हिन्दुओं की आस्था का एक प्रमुख केन्द्र है।
- **कार्तिक माह की पूर्णिमा** को लगने वाला यह मेला संभवतः राजस्थान का सबसे बड़ा मेला है।
- यह मेला देशी-विदेशी पर्यटकों के आकर्षण का प्रमुख केन्द्र है, यहाँ लाखों की संख्या में लोग इकट्ठा होते हैं, इसलिए इसे '**लक्खी मेला**' कहते हैं।
- यहाँ **ब्रह्मा जी का मंदिर**, **सावित्री माता का मंदिर**, पुष्कर सरोवर आदि का धार्मिक महत्त्व है। पुष्कर सरोवर में कार्तिक माह में दीपदान की परम्परा पौराणिक है।
- नागौरी बैल, जैसलमेरी-बीकानेरी ऊँट, घोड़े व अन्य मवेशियों का क्रय-विक्रय भी इस मेले की मुख्य विशेषता है।

जीणमाता मेला

- सीकर जिले के **रैवासा गाँव** में **हर्ष की पहाड़ी** पर जीण माता का मंदिर स्थित है, जिसमें जीणमाता की **अष्टभुजी प्रतिमा** है, जिसके सामने घी और तेल के दो दीपक अखण्ड रूप से कई वर्षों से प्रज्ज्वलित हैं।
- यहाँ वर्ष में दो बार चैत्र और आश्विन मास के नवरात्रों में मेला लगता है, जिसमें राजस्थान के अतिरिक्त अन्य राज्यों के श्रद्धालु भी मनोकामना पूर्ति हेतु आते हैं।
- मुख्यतः राजपूत व मीणा जाति के लोग इस देवी की आराधना करते है।

खाटूश्याम जी मेला

- सीकर जिले में शीश के दानी के रूप में विख्यात खाटूश्याम जी के मंदिर में **फाल्गुन माह** के शुक्ल पक्ष की **दशमी से द्वादशी** तक '**लक्खी मेला**' लगता है। यहाँ श्याम बगीचा व कुण्ड दर्शनीय हैं।

भर्तृहरि का मेला

- अलवर से 40 कि.मी. दूर सरिस्का के जंगलों में उज्जैन के राजा भर्तृहरि की तपोस्थली पर वर्ष में दो बार **वैशाख** और **भाद्रपद** में 'लक्खी मेला' लगता है।
- शरीर पर भस्म मले चिमटा व कमण्डल धारी साधुओं और लंबी दाढ़ी व बालों वाले सैकड़ों कनफटे बाबाओं से यह मेला'**लघु कुंभ**' का आभास कराता है।
- **कालबेलिया नृत्य** इस मेले का मुख्य आकर्षण है।

डिग्गी के कल्याण का मेला

- टोंक जिले की मालपुरा तहसील में डिग्गीपुरी में भगवान विष्णु के स्वरूप राजा कल्याणजी का मेला **श्रावण मास की अमावस्या** को लगता है।
- इस मेले से राजा डिग्व व उर्वशी की कथा जुड़ी हुई है।
- कहा जाता है कि भगवान विष्णु की प्रतिमा के दर्शन से राजा डिग्व का कुष्ट रोग से कल्याण हुआ, इसलिए उन्होंने कल्याण जी का मंदिर बनवाया।
- इस मेले में राजस्थान के अतिरिक्त बंगाल, बिहार, असम से भी श्रद्धालु आते हैं।

6 राजस्थान की लोक कला : लोक संगीत, लोक वाद्य, लोक नाट्य, लोक नृत्य
[Folk Art of Rajasthan : Folk Music, Folk Instruments, Folk Drama, Folk Dance]

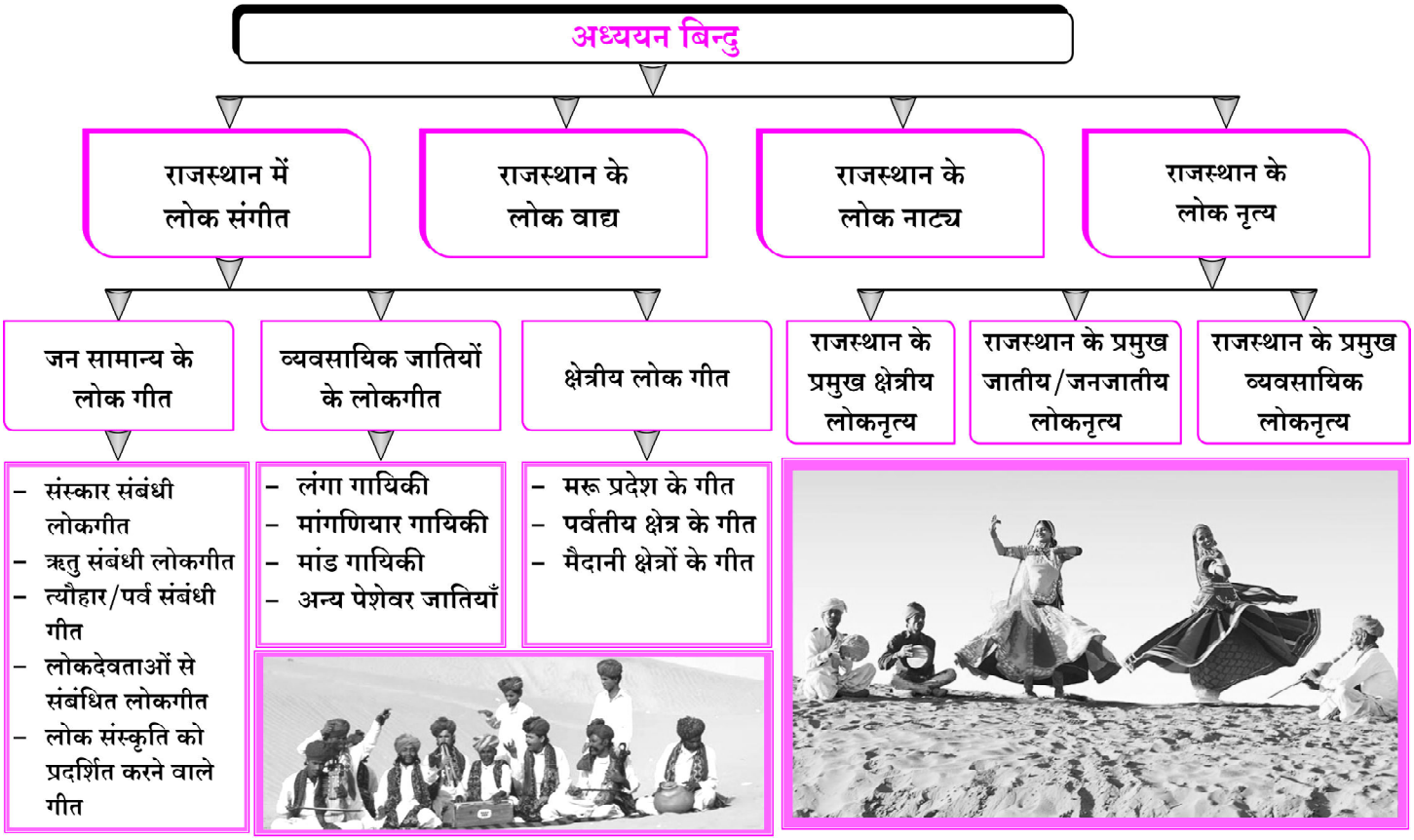

राजस्थान में लोक संगीत

- जनसाधारण के स्वाभाविक उद्‌गारों का प्रतिबिम्ब ही लोक संगीत है। लोक संगीत का मूल आधार लोक गीत हैं, जिन्हें विभिन्न उत्सवों व अनुष्ठानों में सामूहिक रूप से गाया जाता है।
- गाँधीजी के शब्दों में **''लोक गीत ही जनता की भाषा है, लोक गीत हमारी संस्कृति के पहरेदार हैं।''**
- रविन्द्रनाथ टैगोर ने लोक गीतों को ''संस्कृति का सुखद संदेश ले जाने वाली कला'' कहा है।
- **स्टैंडर्ड डिक्शनरी ऑफ फोकलोर माइथोलॉजी एंड लेजेण्ड** में लोकगीत को परिभाषित करते हुए कहा गया है कि- ''लोक गीत उस जनसमूह की संगीतमयी काव्य रचनाएँ हैं, जिसका साहित्य लेखनी अथवा छपाई से नहीं वरन् मौखिक परम्परा से अविरत संबद्ध रहता है।''
- शास्त्रीय संगीत का संबंध जहाँ बौद्धिकता में है, वहीं लोक गीत सीधे मानवीय भावनाओं से संबंधित होते हैं।
- राजस्थान के लोक संगीत को तीन भागों में बाँटा जा सकता है-

जन सामान्य के लोक गीत

जन-साधारण द्वारा गाए जाने वाले गीतों को पाँच भागों में बाँटा जा सकता है-

(1) संस्कार संबंधी गीत

इसके अन्तर्गत जन्म, विवाह आदि संस्कारों से संबंधित गीत गाये जाते हैं, जैसे जच्चा, सगाई, बना-बनी, बधावा, चाक-भात, मायरा, हल्दी, हथलेवा, जला आदि।

जच्चा

- शिशु के जन्म के अवसर पर गाये जाने वाले गीत। इनमें सामान्यतः गर्भिणी की प्रशंसा, वंशवृद्धि और शिशु के लिए मंगलकामना की जाती है। जैसे- **''होलर जाया ने हुई छै बधाई, थे म्हारा वंश बढ़ायो रे अलबेली जच्चा''**

7 राजस्थान की सांस्कृतिक परम्परा एवं विरासत
[Cultural Tradition and Heritage of Rajasthan]

प्रिय विद्यार्थियों आपके पाठ्यक्रम में राजस्थान की सांस्कृतिक परम्परा एवं विरासत नाम से जो बिन्दु दिया गया है। उसके अन्तर्गत राजस्थान का स्थापत्य एवं वास्तुकला, लोक संगीत, लोक नृत्य/नाट्य, यहाँ के मेले एवं सामाजिक रीति-रिवाज, यहाँ की गौरवशाली राजपूत वंश परम्परा, लोक साहित्य, वेशभूषा, आभूषण आदि लोक संस्कृति के विविध पहलू शामिल हैं।

चूंकि उक्त सभी का अध्ययन इसी पुस्तक में अलग-अलग अध्यायों में क्रमबद्ध रूप में किया गया है। तथापि पाठ्यक्रम में अलग बिन्दु होने के नाते इस अध्याय का वर्णन अन्य अध्यायों से अलग विश्लेषणात्मक शैली में किया गया है।

- राजस्थान की संस्कृति एवं परम्परा की मुख्य बात यह है कि राजस्थान के जनमानस की विशालता ने जिस प्रकार सभी मान्यताओं एवं आस्थाओं को फलने-फूलने दिया, उसी प्रकार उनके अनुयायियों के साथ भ्रातृ-भाव रखा।
- अजमेर के ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह विश्वभर के श्रद्धालुओं की आस्था एवं विश्वास का केन्द्र है, जिसमें न धर्म की पाबन्दी है न जाति की; न देश की, न सम्प्रदाय की। हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख एवं अन्य धर्मावलम्बी सभी दरगाह पर अकीदत के फूल चढ़ाते हैं, मनौतियाँ मानते हैं। सूफीमत के संदेशवाहक ख्वाजा साहब की दरगाह के दरबार के प्रखर कव्वाल और गायक थे- **शंकर शंभू कव्वाल**। आज अजमेर सूफी मत का **अन्तरराष्ट्रीय तीर्थ** है।
- पश्चिमी राजस्थान के बाड़मेर जिले के **नाकोड़ा भैरव** जैनियों के पूजनीय तो हैं ही, सनातनियों के भी मान्य हैं। मेवाड़ के केसरिया जी जैनियों के भी मान्य हैं, सनातनियों के भी।

नाकोड़ा भैरव

- यही स्थिति उन लोक देवताओं की हैं, जिन्होंने यहाँ के सुदूर अंचलों में स्थित आदिवासियों, जनजातियों एवं किसानों को सदियों से आस्था के सूत्र में बाँधे रखा।
- रूणेचा में चिर-समाधि में लीन रामदेव, जिस प्रकार हिन्दुओं के **रामदेवजी** हैं, उसी प्रकार मुसलमानों के **राम-सा पीर** भी हैं। आज भी बाबा रामदेव उत्तर भारत के पूजनीय लोकदेवताओं में प्रमुख हैं।
- पाबूजी राठौड़ की गोरक्षा हेतु प्राणाहुति सम्बन्धी लोक गाथा लाखों लोगों को भाव-विभोर करती आई है। लोक गायकों द्वारा पाबूजी की फड़ (सचित्र गुणावली) को गेय में बाँचने की प्रथा मध्यकाल से चली आ रही है।
- राजस्थान के मध्यकालीन सन्तों एवं उनके अनुयायियों द्वारा स्थापित मठों, रामद्वारों, मेलों, समागमों तथा यात्राओं के माध्यम से सांस्कृतिक एवं भावनात्मक एकता के यशस्वी प्रयास का सूत्रपात हुआ।
- सन्तों की मानव कल्याण की कामना तथा प्रेमाभक्ति के सिद्धान्तों ने यहाँ के समाज में भावनात्मक एकता के आयाम के नवीन पट खोले। मन-मिलाने का जो प्रयास सन्तों द्वारा जिस सहजता से किया गया, वह स्तुत्य है और यहाँ की संस्कृति की पहचान है।
- राजस्थानी लोग अपनी संस्कृति और परम्परा पर गर्व करते हैं। उनका दृष्टिकोण परम्परागत है। यहाँ सालभर मेलों और पर्व-त्योहारों का तांता लगा रहता है। यहाँ एक कहावत प्रचलित है— **सात वार, नौ-त्योहार।**
- प्रायः इन मेलों और त्योहारों के मूल में धर्म होता है, लेकिन इनमें से कई मेले और त्योहार अपने सामाजिक और आर्थिक महत्व के परिचायक हैं।
- मनुष्य और पशुओं की अन्तर्निर्भरता को दर्शाने वाले पशु मेले राजस्थान की पहचान हैं। पुष्कर का कार्तिक मेला, परबतसर और नागौर के तेजाजी का मेला, जो मूलतः धार्मिक हैं, राज्य के बड़े पशु मेले माने जाते हैं।
- राजस्थान में तीज को त्योहारों में पहला स्थान दिया जाता है। राजस्थान में एक कहावत प्रचलित है **'तीज त्योहारा बावरी, ले डूबी गणगौर'** इसका अर्थ है, कि त्योहारों के चक्र की शुरुआत श्रावण महीने में तीज से होती है तथा इनका अंत गणगौर से होता है। गणगौर धार्मिक पर्व होने के साथ ही राजस्थान की सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक है। तीज, गणगौर जैसे पर्व महिलाओं के महत्व को भी रेखांकित करते हैं।
- राजस्थान में पुरा सम्पदा का अटूट खजाना है। कहीं पर प्रागैतिहासिक शैलचित्रों की छटा हैं, तो कहीं हड़प्पा संस्कृति के पूर्व के प्रबल प्रमाण और कहीं प्राचीनकाल में धातु प्रयोग के साक्ष्य, कहीं गणेश्वर का ताम्र वैभव, तो कहीं प्रस्तर प्रतिमाओं का शैल्पिक प्रतिमान, कहीं शिलालेखों के रूप में पाषाणों पर उत्कीर्ण गौरवशाली

9 राजस्थान के महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थल [Important Historical Places of Rajasthan]

अचलगढ़

- आबू के निकट अवस्थित अचलगढ़ पूर्व-मध्यकाल में **परमारों की राजधानी** रहा है।
- यहाँ अचलेश्वर महादेव का प्राचीन मन्दिर है। कुम्भा द्वारा निर्मित कुम्भस्वामी का मन्दिर यहीं अवस्थित है।
- **अचलेश्वर महादेव** मन्दिर के सामने चारण कवि दुरसा आढ़ा की बनवाई स्वयं की पीतल की मूर्ति है।
- अचलेश्वर पहाड़ी पर अचलगढ़ दुर्ग स्थित है जिसे राणा कुम्भा ने ही बनवाया था।

अजमेर

- आधुनिक राजस्थान के मध्य में स्थित अजमेर नगर की स्थापना 12वीं शताब्दी में चौहान शासक **अजयदेव** ने की थी।
- यहाँ के मुख्य स्मारकों में कुतुबद्दीन ऐबक द्वारा निर्मित **ढ़ाई दिन का झौपड़ा**, सूफी संत ख्वाजा मुइनुद्दीन हसन चिश्ती की दरगाह, **सोनीजी की नसियाँ** (जैन मन्दिर, जिस पर सोने का काम किया हुआ है), अजयराज द्वारा निर्मित **तारागढ़ दुर्ग,** अकबर द्वारा बनवाया गया किला (मैग्जीन) आदि प्रमुख स्मारक हैं। यह **मैग्नीज फोर्ट** वर्तमान में संग्रहालय के रूप में है।
- यहाँ ख्वाजा साहिब की दरगाह साम्प्रदायिक सद्भाव का जीवंत नमूना है।
- यहाँ चौहान शासक अर्णोराज (आनाजी) द्वारा निर्मित आनासागर झील बनी हुई है। इस झील के किनारे पर जहाँगीर ने **दौलतबाग** (सुभाष उद्यान) और शाहजहाँ ने **बारहदरी** का निर्माण करवाया था।

अलवर

- 18वीं शताब्दी में रावराजा प्रतापसिंह ने अलवर राज्य की स्थापना की थी।
- अलवर का किला, जो बालाकिला के नाम से जाना जाता है, 16वीं शताब्दी में एक अफगान अधिकारी **हसन खां मेवाती** ने बनवाया था।
- अलवर में **मूसी महारानी की छतरी** है, जो राजा बख्तावरसिंह की पत्नी रानी मूसी की स्मृति में निर्मित है। यह छतरी अपनी कलात्मकता के लिए प्रसिद्ध है।
- अलवर का **राजकीय संग्रहालय** दर्शनीय है, जहाँ अलवर शैली के चित्र सुरक्षित है।

आबू

- अरावली पर्वतमाला के मध्य स्थित आबू सिरोही के निकट स्थित है। अरावली पर्वतमाला का सबसे ऊँचा भाग '**गुरु शिखर**' है। महाभारत में आबू की गणना तीर्थ स्थानों में की गई है।
- आबू अपने **देलवाड़ा जैन मन्दिरों** के लिए विख्यात है। यहाँ का विमलशाह द्वारा निर्मित आदिनाथ मन्दिर तथा वास्तुपाल-तेजपाल द्वारा निर्मित नेमिनाथ का मन्दिर उल्लेखनीय है।
- आबू के देलवाड़ा के जैन मन्दिर अपनी नक्काशी, सुन्दर मीनाकारी एवं पच्चीकारी के लिए भारतभर में प्रसिद्ध है।
- इन मन्दिरों का निर्माण 11वीं एवं 13वीं शताब्दी में किया गया था। ये मन्दिर श्वेत संगमरमर से निर्मित है। यहाँ श्वेत पत्थर पर इतनी बारीक खुदाई की गई है, जो अन्यत्र दुर्लभ है।
- आबू पर्वत को अग्नि कुल के राजपूतों की उत्पत्ति का स्थान बताया गया है।

आमेर

- जयपुर से सात मील उत्तर-पूर्व में स्थित आमेर ढूँढाड़ राज्य की जयपुर बसने से पूर्व तक राजधानी था। दिल्ली-अजमेर मार्ग पर स्थित होने के कारण आमेर का मध्यकाल में बहुत महत्त्व रहा है।

आमेर किला, जयपुर

- **कछवाहा वंश की राजधानी** आमेर के वैभव का युग मुगल काल से प्रारम्भ होता है। आमेर का किला दुर्ग स्थापत्य कला का उत्कृष्ट नमूना है।
- यहाँ के भव्य प्रासाद एवं मन्दिर हिन्दू एवं फारसी शैली के मिश्रित रूप हैं। इसमें बने दीवान-ए-आम, दीवान-ए-खास (शीशमहल) आदि की कलात्मकता प्रशंसनीय है। इस किले में जगतशिरोमणि मंदिर और **शिलादेवी मन्दिर** बने हुए है। इनका निर्माण मानसिंह

11 राजस्थान के वस्त्र एवं आभूषण [Garments and Jewelery of Rajasthan]

राजस्थान के वस्त्र एवं आभूषण

राजस्थान में रंग-बिरंगे वस्त्रों का प्रचलन है, लेकिन 'लाल रंग' यहाँ के वस्त्रों में प्रधान है। इसीलिए कहा गया है- **''मारु धारे देश में उपजै तीन रतन, इक ढोला, दूजी मरवण, तीजों कसूमल रंग''** (कसूमल अर्थात् लाल)।

राजस्थान में पुरुषों के परिधान

- राजस्थान में कालीबंगा और आहड़ सभ्यता के समय से ही 'सूती वस्त्रों' का प्रचलन था।
- यहाँ के जनसाधारण में वस्त्रों का प्रचलन कम था। आज भी राजस्थान के प्रत्येक गाँव में **'धोती'** व ऊपर ओढ़ने के **'पछेवड़े'** के सिवा अन्य वस्त्रों का प्रयोग कम किया जाता है।
- सर्दी में **'अंगरखी'** का प्रयोग प्राचीन परम्परा के अनुकूल है। ध्यातव्य है कि धोती घुटनों तक व अंगरखी जांघों तक होती है।
- मुगलकाल में पगड़ियों की विभिन्न शैलियाँ अस्तित्व में आयीं जैसे—अटपटी, अमरशाही, उदेशाही, खंजरशाही, शिवशाही, विजयशाही तथा शाहजहाँनी मुख्य हैं।
- विवाहोत्सव पर **'मोठड़े की पगड़ी'**, श्रावण में लहरिया, दशहरे पर **'मदील'** तथा होली पर फूल-पत्ती की छपाई वाली पगड़ी बांधी जाती थी।
- उच्च वर्ग के लोग **चीरा व फेंटा** बांधते थे।

Note :- पगड़ी को चमकीली बनाने हेतु तुर्रे, सरपेच, बालाबन्दी, धुगधुगी, गोसपेच, पछेवड़ी, लटकन, फतेपैच आदि का प्रयोग होता था।

- वर्तमान में लगभग संपूर्ण भारत में पाश्चात्य वेशभूषा को अपना लिया गया है। फिर भी राजस्थान के कुछ पुरुष परिधान अपना विशिष्ट महत्त्व रखते हैं जो निम्न है—
- **जामा**—शरीर के ऊपरी भाग में विवाह या युद्ध के समय पहना जाने वाला वस्त्र।
- **चोगा**—सम्पन्न वर्ग के परिवार द्वारा प्राचीन काल में अंगरखी पर रेशमी या ऊनी चोगा पहनते थे।
- **आतमसुख**—सर्दियों में पहने जाने वाला रुईदार वस्त्र होता है, जो गले से लेकर टखनों तक लम्बा होता है।
- **कमरबंध/पटका**—अंगरखी के ऊपर कमर के आसपास बांधा जाने वाला वस्त्र।
- **बिरजिस**—चूड़ीदार पायजामे के स्थान पर पहने जाने वाला वस्त्र।
- **पछेवड़ा**—सर्दी के दिनों में पुरुषों द्वारा ओढ़ा जाने वाला कम्बल जैसा वस्त्र।
- **खेस**—सर्दी में पुरुषों द्वारा कन्धों पर डाला जाने वाला वस्त्र।
- **अमोवा**—खाकी रंग से मिलता-जुलता रंग का बना वस्त्र, जिसे शिकारी प्रयोग करते थे।
- **अंगरखी**—पुरुषों द्वारा शरीर के ऊपरी भाग में पहने जाने वाला वस्त्र, अंगरखी कहलाता है, जिसे ग्रामीण **बुगतरी** के नाम से जानते हैं।
- **मलागिरी (मलयगिरी)**—भूरे रंग में चन्दन के रंग से रंगा हुआ वस्त्र, जो वर्षों तक सुगन्धित रहता था।

Note :- सिटी पैलेस जयपुर में सवाई रामसिंह द्वितीय की अंगरखियाँ अभी तक सुगंधित हैं।

- **जोधपुरी कोट**—जोधपुर का प्रसिद्ध कोट, जिसे राष्ट्रीय पोशाक का दर्जा हासिल है।
- **कौपीन**—साधु सन्यासियों द्वारा पहनने का वस्त्र।
- **ढेपाड़ा**—भीलों द्वारा पहनी जाने वाली तंग धोती।
- **पोत्या**—भीलों के सिर का साफा, पोत्या कहलाता है।

राजस्थान में स्त्रियों के परिधान

- **पोमचा**—पोमचे का अर्थ है- 'कमल फूल के अभिप्राय युक्त ओढ़नी'। नवजात शिशु की मां के लिए मातृपक्ष की ओर से दिया जाता है। बेटे के जन्म पर **पीला पोमचा** व बेटी के जन्म पर **गुलाबी पोमचा** देने की परम्परा है।

Note :- पीला पोमचा शेखावाटी क्षेत्र का प्रसिद्ध है। इसका सर्वाधिक प्रयोग जाट महिलाएँ करती हैं।

- **लहरिया**—श्रावण मास में महिलाओं द्वारा लहरिये की साड़ी पहनी जाती है। लहरिए एक, दो, तीन, पाँच और सात रंगों में बनते हैं। जब लहरिए की धारियाँ आपस में कटती हैं, तो उसे **'मोठड़ा'** कहते हैं।

Note :- 'समुद्र लहर' का लहरिया जयपुर के रंगरेज रंगते हैं, इसमें चौड़ी-चौड़ी आड़ी धारियाँ बनती हैं।

- **चुनरी**—बूँदों के आधार पर बनी डिजाइन चुनरी कहलाती है। **'बद्ध तकनीक'** में चुनरी के बंधेज सर्वाधिक लोकप्रिय हैं। जोधपुर (जोधाणा) एवं सीकर की चुनरी बारीक बंधेज हेतु प्रसिद्ध है।

12 राजस्थान में चित्रकला एवं हस्तशिल्प [Painting and Handicrafts in Rajasthan]

अध्ययन बिन्दु

- राजस्थानी चित्रकला की विशेषताएँ
- राजस्थानी चित्रकला की विभिन्न शैलियाँ
  - मेवाड़ स्कूल
    - चावण्ड शैली
    - उदयपुर शैली
    - नाथद्वारा शैली
    - देवगढ़ उपशैली
    - सावर उपशैली
    - शाहपुरा उपशैली
    - बेगूँ, बनेडा, बागौर, केलवा ठिकानों की कला
  - मारवाड़ स्कूल
    - जोधपुर शैली
    - बीकानेर शैली
    - किशनगढ़ शैली
    - अजमेर शैली
    - नागौर शैली
    - जैसलमेर शैली
    - घाणेराव, रियाँ, भिनाय, जूनियाँ आदि ठिकानों की कला।
  - हाड़ौती स्कूल
    - बूँदी शैली
    - कोटा शैली
    - झालावाड़ उपशैली
  - ढूँढ़ाड़ स्कूल
    - आमेर शैली
    - जयपुर शैली
    - शेखावाटी शैली
    - अलवर शैली
    - उणियारा उपशैली
    - झिलाय, ईसरदा, शाहपुरा, सामोद आदि ठिकानों की कला।
- लोक चित्रण की परम्पराएँ
- राजस्थान में हस्तशिल्प

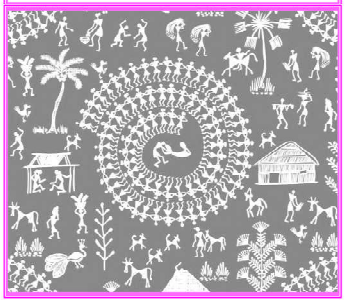

राजस्थान चित्रकला की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है। यहाँ के मंदिर, महल, हवेलियाँ आदि भिन्न-भिन्न चित्र शैलियों से सुसज्जित हैं। राजस्थानी चित्रकला का सर्वप्रथम वैज्ञानिक विभाजन **आनन्द कुमार स्वामी** ने 1916 ई. में अपनी पुस्तक **'राजपूत पेंटिंग्स'** में किया था। राजस्थानी चित्रकला का उद्गम गुजरात की **जैन अपभ्रंश शैली** से माना जाता है। जिसका प्रभाव सर्वप्रथम मेवाड़ पर देखा जाता है। कालांतर में राजस्थानी चित्रकला स्थानीय विशेषताओं, मुगल शैली, कंपनी शैली, कांगड़ा शैली आदि से प्रभावित होती रही।

राजस्थानी चित्रकला की विशेषताएँ

- लोक जीवन से जुड़ाव, भाव प्रवणता, विषय वस्तु की विविधता, विभिन्न रंगों का संयोजन आदि महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ हैं।
- धार्मिक और सांस्कृतिक स्थलों पर पोषित-भक्ति और श्रृंगार का सजीव चित्रण।
- विभिन्न ऋतुओं का श्रृंगारिक चित्रण कर, उनके मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अंकन किया गया है।
- प्राकृतिक सौन्दर्य के साथ-साथ नारी सौन्दर्य का सजीव चित्रण राजस्थानी चित्रकला को एक विशेष पहचान देता है।
- राजस्थानी चित्रशैली विभिन्न राजा-महाराजाओं एवं सामन्तों के संरक्षण में फली-फूली है। इसलिए यहाँ के महलों, किलों, मंदिरों और हवेलियों में अधिक देखी जाती है।
- राजस्थानी चित्रकला पर प्रारम्भ में जैन शैली, गुजराज शैली और अपभ्रंश शैली का प्रभाव था बाद में मुगल शैली के प्रभाव से

13 1857 की क्रांति में राजस्थान का योगदान
[Contribution of Rajasthan in the Revolution of 1857]

10 मई, 1857 को मेरठ से शुरू हुई 1857 की क्रांति ने शीघ्र ही राष्ट्रीय स्वरूप ले लिया। राजस्थान भी इससे अछूता नहीं रहा। राजस्थान में छः सैनिक छावनियाँ मौजूद थी जिनमें सर्वप्रथम नसीराबाद छावनी से सैनिक विद्रोह की शुरुआत हुई। जिसको राजस्थान के असन्तुष्ट जमींदारों, अधिकारियों ने नेतृत्व प्रदान किया तथा जगह-जगह पर जनता ने क्रांतिकारियों का नैतिक समर्थन किया।

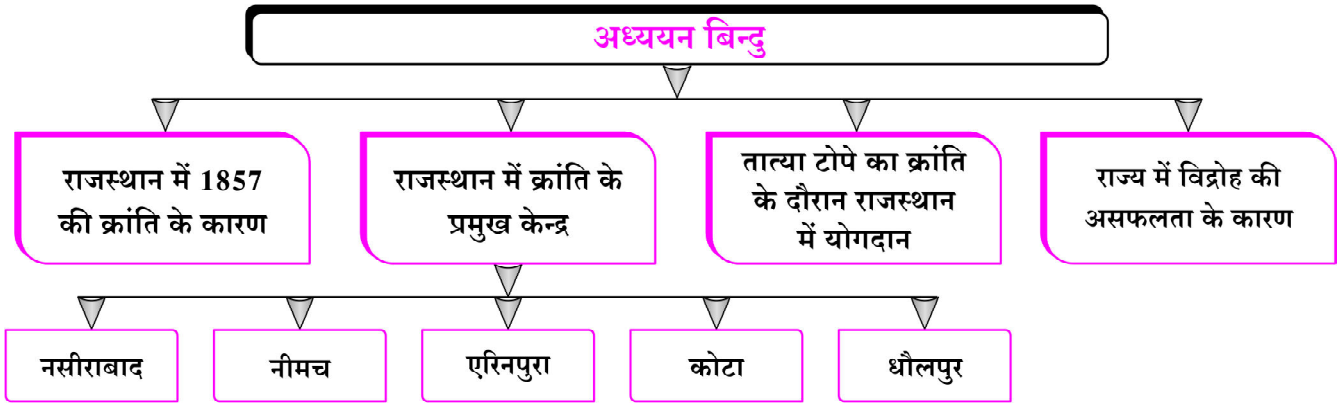

राजस्थान में 1857 की क्रांति के कारण

- राजस्थान के शासकों ने अंग्रेज कंपनी के साथ **सहायक संधियाँ** (1818 ई.) करके मराठों द्वारा उत्पन्न अराजकता से मुक्ति प्राप्त कर ली किन्तु कम्पनी ने राज्यों के **आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप** करके देशी राजाओं की प्रभुसत्ता पर चोट की।
- कम्पनी की नीतियों से सामन्तों की पद मर्यादा व अधिकारों को भी अघात लगा।
- कम्पनी द्वारा अपनाई गई शोषणकारी आर्थिक नीतियों के परिणामस्वरूप राजा, सामंत, किसान, व्यापारी, शिल्पी एवं मजूदर सभी वर्ग पीड़ित हुए।
- **प्रशासन में व्याप्त भ्रष्टाचार** भी एक प्रमुख कारण था।
- लोगों पर पाश्चात्य विचार एवं संस्थाएँ थोपने तथा उनके परम्परागत रीति-रिवाजों को समाप्त करने एवं **ईसाई धर्म प्रचार नीति** एवं उनके सामाजिक सुधारों आदि को जनता ने अपने धर्म व जीवन में घोर हस्तक्षेप माना।
- इस प्रकार सम्पूर्ण राजस्थान में और सभी वर्गों में ब्रिटिश विरोधी भावना व्याप्त थी, इसलिए यहा भी विद्रोह प्रारंभ हुआ।
- विद्रोह के समय राजस्थान में 6 ब्रिटिश छावनियाँ थी, जो इस प्रकार थी -

क्र.सं.	सैनिक बटालियन	छावनी स्थान	जिला/राज्य
1.	बंगाल नेटिव इन्फेंट्री	नसीराबाद	अजमेर
2.	मेरवाडा बटालियन	ब्यावर	अजमेर
3.	कोटा कन्टिलजेन्ट	देवली	टोंक
4.	मेवाड़ भीलकोर	खैरवाड़ा	उदयपुर
5.	जोधपुर लीजियन	एरिनपुरा	सिरोही
6.	नीमच छावनी	नीमच	मध्यप्रदेश

- क्रांति के समय राजस्थान का **ए.जी.जी. पेट्रिक लारेन्स** था एवं भारत का गवर्नर **जनरल लॉर्ड कैनिंग** था।

Note :- भारत में 10 मई, 1857 को मेरठ छावनी से क्रांति की शुरुआत हुई जिसका तात्कालिक कारण चर्बी वाले कारतूस के प्रयोग से इंकार करना था। क्रांतिकारियों द्वारा क्रांति के प्रतीक के रूप में 'कमल' व 'रोटी' को चुना गया। जिसे संदेश बनाकर सभी छावनियों में भेजा गया।

- 1857 की क्रांति के दौरान राजपूताना में नियुक्त पॉलिटिकल एजेन्ट निम्नलिखित है-

14 राजस्थान में किसान व जनजातीय आंदोलन
[Peasants and Tribal Movements in Rajasthan]

अंग्रेजी शासन पहले राजस्थान की रियासतों में राजाओं, सामन्तों एवं किसानों के संबंध परस्पर सहयोग व सद्भाव पर आधारित थे। अकाल के समय में देशी शासक लगान माफ कर दिया करते थे किन्तु 20वीं शताब्दी के पूवार्द्ध में हुई सहायक संधियों द्वारा ये देशी शासक ब्रिटिश नियंत्रण में आ गए। इसके बाद अंग्रेजी सरकार को नियमित खिराज (भू-राजस्व कर) देने तथा आर्थिक शोषण की औपनिवेशिक नीति के दबाव में देशी राजाओं व जागीरदारों ने किसानों का अत्यधिक आर्थिक शोषण किया। इसी प्रकार जनजातीय क्षेत्रों में भी ब्रिटिश हस्तक्षेप हुआ और जिसके परिणामस्वरूप राजस्थान में अनेक किसान व जनजातीय श्रमिक आन्दोलन हुए जिन्हें संपूर्णता में समझना आवश्यक है।

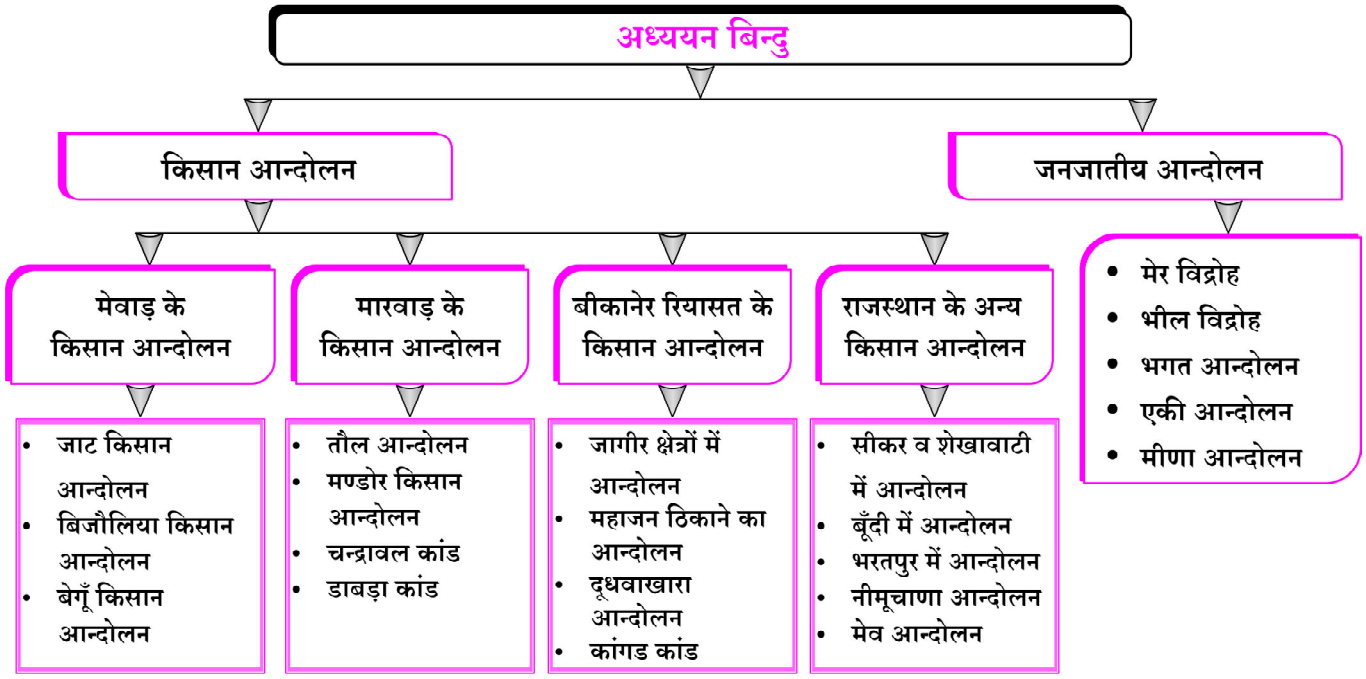

राजस्थान किसान व जनजातीय आन्दोलनों के मुख्य कारण

1. भू-राजस्व की दरों का अत्यधिक बढ़ना।
2. जागीरदारों द्वारा अनावश्यक ली जाने वाली लाग-बाग।
3. ब्रिटिश नियंत्रण का विरोध।
4. आदिवासियों के रीति-रिवाजों, परम्पराओं में ब्रिटिश सरकारों द्वारा हस्तक्षेप करना।
5. जबरन ली जाने वाली बेगार एवं अत्याचार।
6. वन क्षेत्रों पर अतिक्रमण।
7. ईसाई धर्मान्तरण।
8. 1818 ई. की सहायक संधियों के पश्चात देशी रियासतों की सेनाएँ भंग करने से उत्पन्न बेरोजगारी संकट।

रियासती काल में राजस्थान में प्रचलित लाग-बाग

- **तलवार बंधाई**—उत्तराधिकार के समय सामंतो द्वारा प्रजा से लिया जाने वाली लाग (कर)
- **चंवरी कर/लाग**—जागीर के प्रत्येक व्यक्ति को अपनी पुत्री के विवाह के अवसर पर जागीरदार को कर देना पड़ता था जो चंवरी लाग कहलाता था।
- **खिचड़ी बाग**—रियासती सेना के पड़ाव के दौरान भोजन हेतु लाग।
- **कामठा लाग**—गढ़/महल आदि के निर्माण हेतु प्रत्येक घर से वसूली जाने वाली लाग।
- **हल लाग**—प्रतिहल पर किसानों से लिया जाने वाला वार्षिक लाग/कर।
- **चूड़ा लाग**—जागीरदार की पत्नी द्वारा नया चूड़ा पहनने के अवसर पर लिया जाने वाली राशि
- **बेगार**—बिना पारश्रिमिक के जमींदार/सामंतो के घरेलू कार्य करना।
- **कांसा लाग**—जागीरदार के ठिकाणे में गमी (शोक) के अवसर पर भोजन पकाकर पहुँचाना।
- **अखराई**—राजकोष में जमा करवाई जाने वाली राशि पर एक प्रतिशत उपकर

15 राजस्थान में प्रजामंडल आन्दोलन एवं राजनीतिक जागृति
[Prajamandal Movement and Political Awakening in Rajasthan]

राजस्थान में प्रजामण्डल आन्दोलन

प्रजामण्डल कांग्रेस के अप्रत्यक्ष समर्थन पर आधारित राजनीतिक संस्थाएँ थीं। जिन्होंने देशी रियासतों के अन्दर स्वतन्त्रता आन्दोलन चलाया एवं जन-जागरण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

पृष्ठभूमि

- प्रारंभ में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने देशी राज्यों के मामलों में अहस्तक्षेप की नीति अपनाई और केवल खादी का प्रयोग व प्रचार एवं सामाजिक सुधारों तक ही राष्ट्रवादी गतिविधियों को सीमित रखा।
- 1927 ई. में **'अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद्'** की स्थापना के साथ ही कांग्रेस ने देशी रियासतों में सक्रिय राजनीतिक भूमिका निभाई।
- 1931 ई. में रामनारायण चौधरी ने अजमेर में देशी राज्य लोक परिषद् का **प्रथम प्रांतीय अधिवेशन** आयोजित किया।
- 1938 ई. में कांग्रेस के **हरिपुरा अधिवेशन** में कांग्रेस ने रियासतों में चल रहे स्वतन्त्रता संघर्ष एवं प्रजामण्डल आन्दोलनों को अपना समर्थन दिया।
- इसके बाद राजस्थान की रियासतों में तेजी से प्रजामण्डलों की स्थापना हुई।

उद्देश्य

- देशी राजाओं पर अंग्रेजों से सहायक संधियाँ तोड़ने हेतु दबाव बनाना।
- रियासतों में उत्तरदायी शासन की स्थापना करना।
- जनता को राजनीतिक रूप से शिक्षित करना एवं नागरिक अधिकारों की सुरक्षा की वकालत करना।
- भविष्य में बनने वाले भारतीय संघ में शामिल होने के लिए राजाओं को तैयार करना।

विभिन्न रियासतों में प्रजामण्डल आन्दोलन की गतिविधियाँ

क्र. सं.	प्रजामण्डल का नाम	संस्थापक (स्थापना वर्ष)	प्रजामंडल आंदोलन की क्रमबद्ध गतिविधियाँ
1.	**जयपुर प्रजामण्डल**	**कर्पूरचन्द पाटनी** (1931 ई.) **पुर्नगठन** (1938 ई.) इसके पुर्नगठन में जमनालाल बजाज व हीरालाल शास्त्री की महत्वपूर्ण भूमिका थी।	❖ जयपुर में अर्जुनलाल सेठी द्वारा राजनीतिक आन्दोलन का प्रारंभ हुआ। ❖ 1927 ई. में जमनालाल बजाज द्वारा **'चरखा संघ'** की स्थापना हुई। ❖ 1931 ई. में कर्पूरचन्द पाटनी ने जयपुर प्रजामण्डल की स्थापना की, किन्तु इसके राजनीतिक रूप से प्रभावी नहीं होने के कारण कांग्रेस के हरिपुरा अधिवेशन के बाद जमनालाल बजाज व हीरालाल शास्त्री के सक्रिय सहयोग से 1938 ई. में जयपुर राज्य प्रजामण्डल का पुनर्गठन हुआ। ❖ जयपुर सरकार द्वारा प्रजामण्डल पर प्रतिबंध लगा दिया एवं हीरालाल शास्त्री, चिरंजीलाल अग्रवाल, कपूरचंद पाटनी आदि को गिरफ्तार कर लिया गया। ❖ अब जयपुर में प्रजामण्डल पर रोक के विरोध में सत्याग्रह हुआ, जिसका संचालन **गुलाबचन्द कासलीवाल** व **दौलतमल भंडारी** ने किया। **दुर्गावती शर्मा** के नेतृत्व में महिलाओं ने भी इस सत्याग्रह में गिरफ्तारी दी। ❖ गाँधीजी द्वारा जयपुर प्रजामण्डल के प्रश्न को अखिल भारतीय स्तर पर उठाया गया, इसके बाद 7 अगस्त 1939 ई. को समझौता हुआ, जिसके तहत प्रजामण्डल को मान्यता मिली। ❖ मार्च 1940 ई. में इसका विधिवत् पंजीकरण हुआ और **हीरालाल शास्त्री** इसके पहले अध्यक्ष बने। ❖ 1942 ई. में हीरालाल शास्त्री व जयपुर के प्रधानमंत्री मिर्जा इस्माल के बीच **जेन्टलमेन्स एग्रीमेन्ट** हुआ, जिसके तहत जयपुर प्रजामण्डल ने भारत छोड़ो आन्दोलन से अलग रहने का निर्णय किया। ❖ शास्त्रीजी के इस निर्णय का विरोध करते हुए बाबा हरिशचन्द्र के नेतृत्व में **आजाद मोर्चा** प्रजामण्डल से पृथक हो गया। बाद में 1945 ई. में नेहरू जी के प्रयासों से यह पुनः प्रजामण्डल में शामिल हुआ।

16 राजस्थान का एकीकरण [Integration of Rajasthan]

15 अगस्त 1947 ई. को देश आजाद हुआ, तब हमारे सामने तीन प्रमुख चुनौतियाँ थीं—1. देश का राजनीतिक एकीकरण करना, 2. लोकतंत्रात्मक शासन की नई पद्धति को स्थायी बनाना, 3. देश का आर्थिक विकास करना। तत्कालीन परिस्थितियों में एकीकरण प्रमुख चुनौती थी, जिससे निपटने हेतु **5 जुलाई 1947 ई.** को सरदार वल्लभ भाई पटेल की अध्यक्षता में **रियासती विभाग** का गठन हुआ। श्री **वी.पी. मेनन** इसके सचिव थे। पटेल के नेतृत्व में एकीकरण का कार्य शुरू किया गया। पटेल ने एक वक्तव्य प्रसारित करते हुए देशी राजाओं से 15 अगस्त 1947 तक भारतीय संघ में शामिल होने का आह्वान किया।

अध्ययन बिन्दु

एकीकरण से पूर्व राजस्थान की स्थिति एवं रियासतों द्वारा संघ बनाने के प्रयास।

- मेवाड़ महाराणा द्वारा संघ बनाने का प्रयास
- जयपुर के मानसिंह द्वारा संघ बनाने का प्रयास
- हाडौती संघ बनाने का प्रयास
- बागड़ संघ निर्माण का प्रयास
- रियासतों की समस्याएं

राजस्थान के एकीकरण के विभिन्न चरण एवं उनका क्रमबद्ध घटनाक्रम

- I चरण–मत्स्य संघ
- II चरण – संयुक्त राजस्थान
- III चरण – मेवाड़ का विलय
- IV चरण – वृहत राजस्थान
- V चरण – संयुक्त वृहत राजस्थान
- VI चरण – सिरोही का विनय
- VII चरण – वर्तमान राजस्थान

एकीकरण से पूर्व राजस्थान की स्थिति एवं रियासतों द्वारा संघ बनाने का प्रयास

❖ स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय राजस्थान 19 रियासतें, 3 ठिकाने एवं **'अजमेर मेरवाड़ा'** का केन्द्र शासित प्रदेश था।

19 रियासतें

अलवर, भरतपुर, करौली, धौलपुर, कोटा, बूँदी, झालावाड़, टोंक, किशनगढ़, डूँगरपुर, बाँसवाड़ा, शाहपुरा, प्रतापगढ़, मेवाड़, जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर, सिरोही

3 ठिकाने

नीमराणा (अलवर)
लावा (टोंक)
कुशलगढ़ (बाँसवाड़ा)

❖ भारत सरकार के रियासती सचिवालय के निर्णयानुसार केवल वे रियासतें अपना स्वतन्त्र अस्तित्व रख सकती थीं, जिनकी आय 1 करोड़ रूपये वार्षिक एवं जनसंख्या 10 लाख या अधिक हो।

❖ इस मापदण्डानुसार राजस्थान में केवल **जोधपुर, जयपुर, उदयपुर एवं बीकानेर** रियासतें ही इस शर्त को पूरा कर सकती थी। अतः छोटी रियासतों के पास या तो भारतीय संघ में शामिल होने या फिर आपस में मिलकर स्वावलम्बी इकाईयाँ बनाने के अलावा कोई अन्य विकल्प नहीं था।

❖ इसी कारण मेवाड़, जयपुर एवं कोटा के शासकों द्वारा एकीकरण से पूर्व ही छोटे–छोटे राज्यों को मिलाकर बड़ी इकाई बनाने का प्रयास किया गया।

राजस्थानी भाषा [RAJASTHANI LANGUAGE]

1 राजस्थान की क्षेत्रीय बोलियाँ [Regional Dialects of Rajasthan]

राजस्थानी भाषा का विकास एवं बोलियाँ

परिचय

- 'राजस्थानी भाषा' से आशय-राजस्थान में बोली जाने वाली जन भाषा से है। यह विभिन्न बोलियों (मारवाड़ी, मेवाड़ी, ढूँढाड़ी, मेवाती, हाड़ौती) का सामुहिक रूप है।
- 8वीं शताब्दी में रचित **उद्योतन सूरी** के ग्रन्थ **'कुवलयमाला'** में वर्णित 18 देशी भाषाओं में **'मरूभाषा'** का उल्लेख है।
- राजस्थान की भाषा के लिए **'राजस्थानी'** नाम का प्रयोग सर्वप्रथम **'जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन'** ने 1912 ई. में अपने प्रसिद्ध ग्रंथ **'लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया'** में किया है।
- 'आइने-अकबरी' में भी अबुलफजल ने भारत की प्रमुख भाषाओं मे 'मारवाड़ी' का नाम गिनाया है।

Note :- केन्द्रीय साहित्य अकादमी (दिल्ली) ने राजस्थानी भाषा को एक स्वतन्त्र भाषा के रूप में मान्यता तो दी है, किन्तु अभी इसे संवैधानिक मान्यता नहीं मिल पाई है।

उत्पत्ति एवं विकास

- भाषा विज्ञान के अनुसार राजस्थानी भाषा **'भारोपीय भाषा समूह'** के अन्तर्गत आती है।
- समस्त भारतीय भाषाओं की जननी **'वैदिक संस्कृत'** रही है।
- कहा जाता है कि भाषा कठिनता से सरलता की ओर अग्रसर होती है। धीरे-धीरे वैदिक संस्कृत का स्थान लौकिक संस्कृत ने तथा लौकिक संस्कृत का स्थान कालांतर में पालिभाषा एवं प्राकृत भाषा ने ले लिया। जब ये भी कठिन लगने लगी तो- अपभ्रंश भाषाओं का विकास हुआ।
- राजस्थानी भाषा के विकास के संबंध में तीन अपभ्रंश भाषाओं का उल्लेख किया जाता है-
  1. शौरसेनी अपभ्रंश
  2. नागर अपभ्रंश
  3. मरुगुर्जरी अपभ्रंश
- प्रत्येक विद्वान इस संदर्भ में अलग-अलग मत प्रकट करते हैं, जैसे-

क्र.स.	भाषाविद	उत्पत्ति के संदर्भ में मत
1.	डॉ.एल.पी. टेसीटोरी	शौरसेनी अपभ्रंश
2.	डॉ.महावीर प्रसाद शर्मा	शौरसेनी अपभ्रंश
3.	जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन	नागर अपभ्रंश
4.	पुरुषोत्तम मेनारिया	नागर अपभ्रंश
5.	मोतीलाल मेनारिया	गुर्जरी अपभ्रंश
6.	के.एम.मुंशी	गुर्जरी अपभ्रंश
7.	डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी	सौराष्ट्री अपभ्रंश

Note :- (1) उपर्युक्त मतों में **'मरुगुर्जरी अपभ्रंश'** का मत अधिक उचित प्रतीत होता है क्योंकि मरुगुर्जरी अपभ्रंश से ही मरुभाषा (राजस्थानी) तथा गुर्जरी (गुजराती) भाषा का विकास हुआ है। साहित्यिक समानता एवं भौगोलिक दृष्टिकोण से भी यह मत समाचीन प्रतीत होता है।
(2) राजस्थानी भाषा 12वीं शताब्दी के अंत में अस्तित्व में आ गई थी।

डॉ. मोतीलाल मेनारिया द्वारा प्रस्तुत राजस्थानी भाषा का वंशवृक्ष

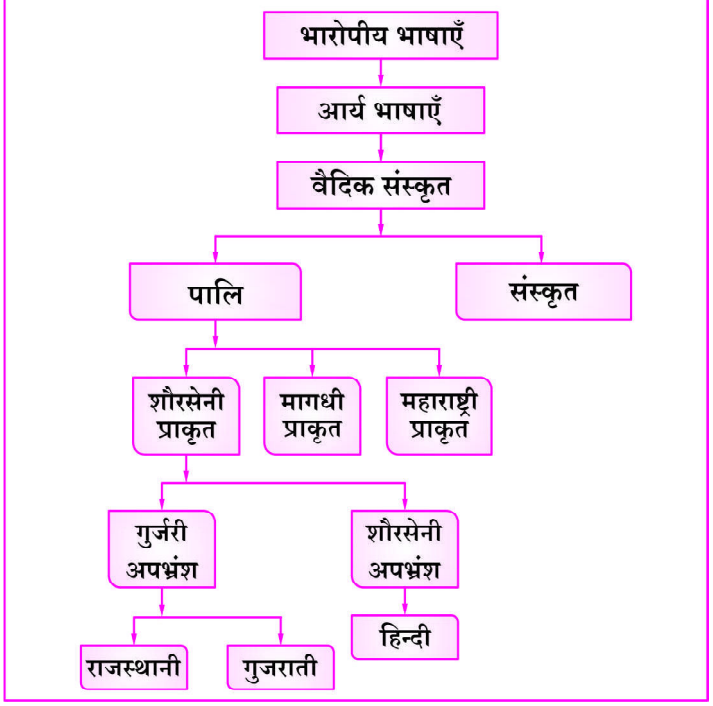

2 प्रमुख राजस्थानी कृतियाँ [Major Rajasthani Masterpieces]

संस्कृत शैली के साहित्य की प्रमुख रचनाएँ

प्रमुख ग्रंथ	लेखक	प्रमुख विशेषताएँ
पृथ्वीराज विजय	जयनायक भट्ट	सपादलक्ष एवं अजमेर के चौहानों का इतिहास
हम्मीर महाकाव्य	नयनचन्द्र सूरी	रणथम्भौर के चौहानों का इतिहास।
राजवल्लभ, देवमूर्ति प्रकरण, प्रसाद मण्डन	मण्डन	15वीं सदी का सैनिक संगठन, स्थापत्य कला एवं मेवाड़ आदि की जानकारी, मण्डन कुम्भा का राजशिल्पी था।
नाथ-चरित्र	मानसिंह (जोधपुर का शासक)	जोधपुर के मानसिंह ने कई जगहों से संस्कृत ग्रंथ मगँवाकर **मानसिंह पुस्तक प्रकाश** नामक पुस्तकालय खुलवाया।
राज विनोद	सदाशिव भट्ट	सदाशिव भट्ट के इस ग्रंथ से 16वीं सदी के बीकानेर की जानकारी
एकलिंगमहात्मय	कान्हा व्यास	मेवाड़ के गुहिलों का इतिहास
अमरसार	पं. जीवाधर	राणा प्रताप एवं अमरसिंह प्रथम की जानकारी
अमरकाव्य वंशावली	रणछोड़ भट्ट	मेवाड़ के गुहिलों का, विशेषकर महाराणा राजसिंह सिसोदिया का इतिहास
राज रत्नाकार	सदाशिव	महाराणा राजसिंह सिसोदिया की जानकारी
अतिजोदय	भट्ट जगजीवन	जोधपुर के राठौड़ो का मुगलों के साथ संघर्ष की जानकारी
भट्टि काव्य	भट्टि	15वीं सदी के जैसलमेर की राजनीतिक एवं सामाजिक स्थिति
वंशोत्कीर्तनकम्-काव्यम्	कर्मचन्द्र	बीकानेर राज्य के राठौड़ों की जानकारी।

राजस्थानी साहित्य की महत्त्वपूर्ण कृतियाँ

क्र. सं.	ग्रंथ	लेखक	विशेष
1.	**पृथ्वीराज रासौ**	**चन्दबरदाई**	❖ **पिंगल शैली** में रचित, **हिन्दी साहित्य का प्रथम महाकाव्य**। जिसे **जल्हण** ने पूरा किया।
2.	**राजविनोद**	**भट्ट सदाशिव**	
3.	**बीसलदेव रासो**	**नरपति नाल्ह**	❖ **अजमेर** के शासक **विग्रहराज चौहान चतुर्थ** के शासनकाल का वर्णन।
4.	**वेलि किसन रुकमणि री दसम भागवत रा दूहा**	**पृथ्वीराज राठौड़**	❖ गागरोनगढ़ दुर्ग में लिखित डिंगल शैली में लिखित इस ग्रंथ को **कवि दुरसा आढ़ा** ने **पाँचवा वेद** एवं **उन्नीसवां पुराण** कहा है। पृथ्वीराज राठौड़ को टेस्सीटोरी ने **'डिंगल का हैरोस'** कहा है। दसरथ रावउत, वसदे रावउत, गंगा लहरी इनकी अन्य प्रमुख रचनाएँ है।
5.	**बुद्धि रासो**	**जानकवि**	❖ एक मुस्लिम लेखक द्वारा पंचतंत्र पर रचित पुस्तक (कलीला-दमना)
6.	**बाँकीदास री ख्यात**	**बाँकीदास**	❖ इसमें **जोधपुर राज्य का वर्णन** है। **गिरि सुमेल युद्ध का वर्णन** भी इस ख्यात में किया गया है। बाँकीदास द्वारा **आयो अंगरेज मुल्क रे ऊपर गीत** की रचना की गई थी।

3 राजस्थानी साहित्य : प्रमुख साहित्यकार, संत साहित्य एवं लोक साहित्य
[Rajasthani Literature : Prominent Litterateurs, Saint Literature & Folk Literature]

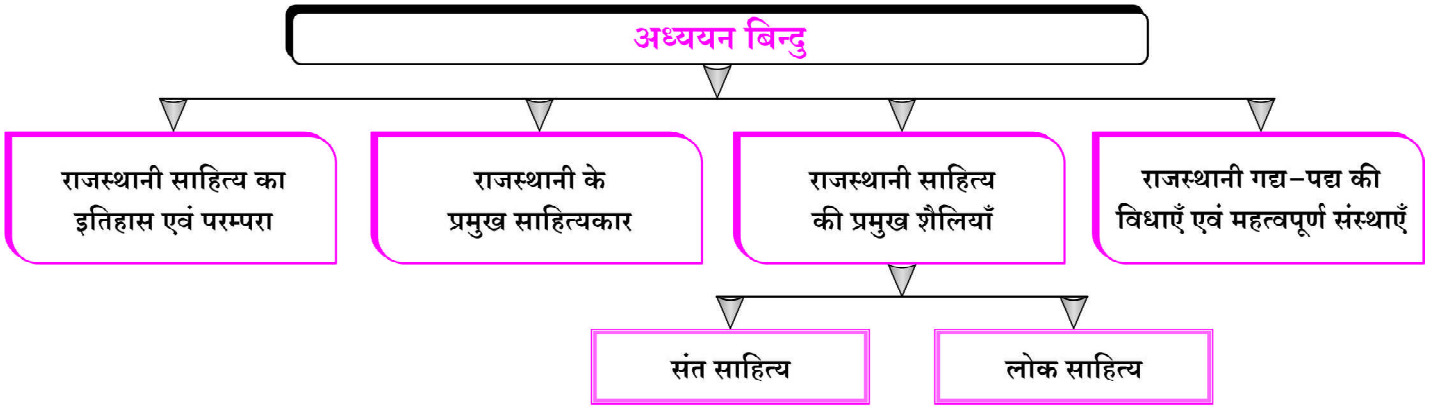

राजस्थानी साहित्य का इतिहास एवं परंपरा

राजस्थानी साहित्य के इतिहास लेखन में डॉ.एल.पी. टेसीटोरी, सीताराम लालस, नरोत्तम स्वामी, डॉ.महावरी प्रसाद शर्मा, मोतीलाल मेनारिया आदि विद्वानों का नाम उल्लेखनीय हैं। राजस्थानी साहित्य की इतिहास परंपरा को हम 4 कालखण्डों के माध्यम से समझ सकते हैं—

1. प्राचीन काल–वीरगाथा काल (1050–1450 ई.)

- इस काल में भारत पर अरबों, तुर्कों एवं मुगलों का आक्रमण हुआ था, जिनका प्रभाव साहित्य रचना पर भी पड़ा। इस दौरान वीर रसात्मक काव्यों का सृजन किया गया, इसलिए इस काल को वीरगाथा काल नाम दिया गया **'श्रीधर व्यास'** की 'रणमल्ल छंद' तथा जयानक का 'पृथ्वीराज विजय' इस काल के महत्त्वपूर्ण उदाहरण हैं।

2. पूर्वमध्य काल– भक्ति काल (1450–1650 ई.)

- इस काल में राजस्थान मे विभिन्न संतों व सम्प्रदायों का उदय हुआ। इन सम्प्रदायों ने सगुण व निर्गुण उपासना, गुरु की महता पर बल दिया तथा जाति भेद को मिटाते हुए कहा– **''जात पांत पूछै नहीं कोई, हरि को भजै सो हरि का होय।''**
- इस काल की रचनाओं में भक्त शिरोमणि **मीरांबाई के पद**, पृथ्वीराज राठौड़ की **'वेलि किसण रुकमणि री'**, माधोदास दधवाड़िया की **'रामरासो'**, ईसरदास की **'हरिरस'** व **'देवियांण'**, सायांजी झूला की **'नागदमण'** आदि प्रमुख रचनाएँ हैं।

3. उत्तर मध्यकाल– श्रृंगार, रीति एवं नीति परक काल (1650–1850 ई.)

- यह राजनीतिक दृष्टि से अपेक्षाकृत शांति का काल रहा है। इसलिए शासकों ने अपने दरबार मे साहित्यकारों व कलाकारों को संरक्षण प्रदान किया, जिससे साहित्य के विविध आयामों का विकास हुआ।
- इस काल में श्रृंगार, रीति एवं नीति से संबंधित रचनाएँ प्रस्तुत की गईं जिनमें **'राजिया रा सोरठा'**, **'चकरिया रा सोरठा'**, **'मोतिया रा सोरठा '**आदि प्रमुख हैं।
- काव्य शास्त्र से संबंधित रचनाओं में **कवि मंछाराम** ने **'रघुनाथ रूपक'** प्रस्तुत किया।

4. आधुनिक काल–विधि विषयों एवं विधाओं से युक्त (1850 से अद्यतन)

- आधुनिक काल में 1857 ई. के पश्चात् समाज में नवीन चेतना का संचार हुआ, साहित्य पर भी इसका प्रभाव पड़ा।
- आधुनिक काल में राजस्थानी साहित्य में नवीन चेतना का शंखनाद बूंदी के **सूर्यमल्ल मीसण** एवं मारवाड़ के **कविराजा बांकीदास** द्वारा किया गया, जिससे समाज में राष्ट्रप्रेम व क्रांतिकारी विचारों का प्रसार हुआ।

प्रमुख राजस्थानी साहित्यकार

वज्रसेन सूरि

- भरतेश्वर बाहुबली घोर वज्रसेन सूरि की प्रसिद्ध रचना है। इसमें